हिन्दू महासभा को समर्पित पत्र

मासिक संरक्षक ॐ परमपिता परमात्मा, सहयोगी आपका स्नेह

# सावरकर टाइम्स

सर्वोपर देश हित

संपादक : जंगबहादुर क्षत्रिय 9599552030 * मूल्य दो रुपए
पंजाब -07837460375 savarkartimes7@gmail.com



क्रांतिकारियों के गुरु वीर सावरकर जी

वर्ष-12 (मासिक) डाक तिथि : 11-12 **अक्तूबर-2017** DELHIN/13377/2004 DL (E)-21/5052- नव संवत् का सातवा महीना, कार्तिक कृष्ण पक्ष २०७४

**देश का विभाजन दो विचार धाराओं पर हुआ हिन्दू एवं मुस्लिम। पापिस्तान और हिन्दुस्थान। बंटवारे के कारण 35 लाख निर्दोष हिन्दुओं का भयंकर कत्लेआम, लाखों बलात्कार और सब कुछ लुट गया। कांग्रेसियों ने हिन्दू राज के स्थान पर भारत में धर्मनिरपेक्ष (धर्मविरूद्ध या धर्म विहीन या मानवता हीन) राज्य बनाकर हिन्दुओं के साथ विश्वासघात किया और इन्हीं इस्लाम व ईसाई आतंकवाद समर्थक धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने भारत को पुनः पतन की ओर धकेल दिया। इस्लाम व ईसाईयत विदेशी हमलावर सभ्यताएं है, भारत की नहीं। 542 वर्ष पूर्व भारत में कोई भी मस्जिद नहीं थी, 250 वर्ष पूर्व भारत में कोई चर्च नहीं था। देश के धर्मनिरपेक्ष नेता राष्ट्रभक्त नहीं स्वार्थी सत्तालोलुप और देशद्रोही हैं। मूल निवासी हिन्दुओं का अस्तित्व एवं सम्मान सत्ता में हिन्दू महासभा को लाए बिना संभव नहीं। यदि अंग्रेज विदेशी हैं तो मुसलमान स्वदेशी कैसे-** स्व. चमन लाल क्षत्रिय

## छठ पूजा पर दो आब नहर में पानी छोड़ने की मांग

जालंधर। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने प्रशासन से आग्रह किया है कि छठ पूजा पर्व के दृष्टिगत जालंधर से गुजरती बिस्त दोआब नहर के हिस्से की सफाई कर वहां स्वच्छ जल प्रवाह तुरंत शुरू करवाया जाए।

इस संबंध में हिन्दू महासभा के प्रदेशाध्यक्ष जंग बहादुर क्षत्रिय तथा प्रदेश उपाध्यक्ष रमन पराशर पं. बाल कृष्ण शर्मा के नेतृत्व में प्रशासन को एक ज्ञापन देकर यह आग्रह किया है।

गौर हो की पंजाब में जालंधर सहित उत्तर प्रदेश और बिहार के हजारों की संख्या में बंधु रहते हैं और छठ पर्व इनका प्रमुख त्योहार है। इस दिन स्त्री-पुरुष बड़ी संख्या में सूय को पानी में खड़े होकर अर्ध्य देते हैं, महासभा ने कहा कि विभिन्न धार्मिक संस्थानों के द्वारा बनवाये जाने वाले अस्थायी सरोवर भी सहायक रहते हैं लेकिन अधिकतर आबादी इस नहर के किनारे बसती है।

## मुख्य न्यायधीश को लिखा पत्र

**सेवा में,**
**माननीय मुख्य न्यायधीश महोदय,**
**पंजाब हाईकोर्ट, चंडीगढ़**
**विषय : अश्लील और चरित्रहीन वाले गानों पर पाबंदी लगाने के लिये प्रार्थना।**
**आरणीय श्रीमान जी,**

सब जानते हैं कि पंजाब पवित्र महापुरुषों, संतों, ऋषियों, गुरुओं की धरती है। यहां पर वेदों की रचना और उपनिषदों का निर्माण, भगवान वाल्मीकि रामायण की रचना और पुराने महा पंजाब में महाभारत के समय श्री गीता जी का प्राकट्य हुआ था। हमारे पूज्यनीय दस गुरु सहबान ने भी पंजाब को पावन किया। हमारे पंजाब में गायक लोग और फिल्मी अभिनेता स्टेजों और विवाहों पर अश्लील और चरित्रहीनता को बढ़ाने वाले गंदे गाने गाकर जहर घोल रहे हैं। जिसका नौजवानों और नई पीढ़ी पर बहुत गन्दा असर पड़ रहा है।

नम्र निवेदन है कि ऊपर बताये हुए अश्लील और चरित्रहीनता वाले गानों पर रोक लगाई जाये, इसकी जगह देश प्यार, वीर रस और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के प्रचार को बढ़ावा दिलवाया जाये, कृपा ऐसा मार्ग प्रशस्त करने की कृपा करें।

**धन्यवाद सहित,**

**भवदीय प्रार्थी,**
जंग बहादुर क्षत्रिय, अध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा पंजाब
रमन प्राशर, उपाध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा पंजाब
बाल कृष्ण शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारत हिन्दू महासभा पंजाब

## सुप्रीम कोर्ट ने घुसपैठियों की लगाई गयी रोक पर हिन्दू महासभा ने जताई चिंता-डॉ. राय

अखिल भारत हिन्दू महासभा लोकतंत्र के अध्यक्ष डॉ. संतोष राय ने एक प्रेस नोट में कहा है कि सुप्रीम कोर्ट की एक खण्डपीठ के माननीय न्यायधीश दीपक मिश्रा, ए.एम. खान, डी.वाई. चंद्र चूड़ ने जो रोक लगाई है इससे जाहिर होता है कि इन महानभावों ने भारत के इतिहास को देखा हीनहीं है।

डॉ. राय ने जजों को लिखे पत्र में बताया है कि सुप्रीम कोर्ट से मात्र दो कि.मी. चांदनी चौक जहां इस्लामिक आतंकवादियों ने 11 नवंबर 1675 को गुरु तेगबहादुर जी का सिर कलम किया था, भाई मतीदास को आरे से चीरा गया, भाई सतीदास को रुई में लपेटकर जिंदा जलाया गया, भाई दयाला को उबलती देग में डाला गया। गुरू गोविंद सिंह को सोते समय पेट में खंजर भोंक कर मार डाला, इनके दो पुत्र जिनकी उम्र 7, 9 वर्ष की अवस्था में सरहिन्द शहर की दीवार में जिंदा चुनवा दिया। वीर वन्दा बहादुर को यातनाएं देते समय 3 वर्षीय पुत्र का दिल निकाल कर पिता के मुंह में ठूंसा गया। वीर वन्दा बहादुर की आंखें फोड़कर जिंदा शरीर के टुकड़े-टुकड़े किये गये थे।

13 वर्ष के वीर हकीकत राय को इस्लाम स्वीकार न करने पर सिर धड़ से अलग कर दिया। इसकी प्रमाणिकता आप दिल्ली के गुरुद्वारे शीश गंज साहिब में देख सकते हैं। इस पर सांसद ओवेसी ने कहा है कि भारत में हिन्दू भी तो बाहर से आये थे पर ये हिन्दू विश्व शांति और अमन का पैगाम लेकर आये थे पर यह इस्लाम कहता है कि जो मुसलमान न बने उसका कत्ल कर दो प्रत्यक्ष कुरान प्रमाणिकता के लिए देख सकते हैं।

## पंजाब में आतंकवाद को देखते हुए उद्योगपति व्यापारियों में खलबली-हिन्दू महासभा ने पंजाब के राज्यपाल एवं मुख्य न्यायधीश को लिखा पत्र

लुधियाना। पंजाब हिन्दू महासभा के अध्यक्ष जंग बहादुर क्षत्रिय तथा कार्यध्यक्ष पं. बाल कृष्ण शर्मा, श्री रमन पाराशर उपाध्यक्ष ने लिखे पत्र में बताया है कि पंजाब में खालिस्तान के 7 आतंकवादी पकड़े जाने पर यहां के तमाम उद्योग पतियों तथा व्यापारियों में खलबली मची हुई है। श्री जंगबहादुर क्षत्रिय जी ने राज्यपाल एवं मुख्य न्यायधीश को लिखे पत्र में बताया है कि पिछले आतंकवाद में 35 हजार औरतों बच्चे और आदमियों को बसों तथा गाड़ियों से निकालकर गोलियों से भूना गया था।

महोदय जी यदि आप ने पंजाब के आतंकवाद पर ध्यान नहीं दिया तो पंजाब के टुकड़े हो सकते हैं यहा की रक्षा सुरक्षा के लिए आप दोनों महानुभाव कर्णधार हैं आशा है कि आप पंजाब में सुख शांति अमन बनाए रखने के लिए पंजाब के सभी जिलों में सीबीआई का गठन कर मत्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगे।

एक बार फिर से पंजाब का माहौल खराब करने के लिए इंग्लैंड में बैठे आतंकी सुरिंद्र सिंह बब्बर द्वारा फेसबुक के माध्यम से पंजाब भर से 7 युवाओं को इकट्ठा कर टीम खालिस्तान तैयार की गई। इन आतंकियों के माध्यम से वह पंजाब में बड़ी वारदातों को अंजाम दे पाता, उससे पहले ही काउंटर इंटेलीजेंस व लुधियाना कमिश्नरेट पुलिस की संयुक्त टीम ने इन युवकों को सेक्टर-32 चंडीगढ़ रोड़ से दबोच लिया। दशहरे के दिन पुलिस के हाथ यह ड़ी सफलता लगी है। सभी आतंकियों के खिलाफ थाना डिवीजन नं. 7 में केस दर्ज किया गया है। पुलिस को इनके पास से 32 बोर की एक अवैध रिवॉल्वर, 20 जिंदा कारतूस व 315 बोर के 2 रिवॉल्वर व 13 जिंदा कारतूस बरामद हुए हैं। उपरोक्त जानकारी पुलिस कमिश्नर आरएन ढोके व डीसीपी क्राइम गगन अजीत सिंह ने दी।

उन्होंने बताया कि पकड़े गबए आतंकियों की पहचान कुलदीप सिंह दिल्ली सुभाष नगर, बस्ती जोधेवाल, जसवीर सिंह निवासी तरनतारन, अमनप्रीत सिंह निवासी मोगा, मनप्रीत सिंह निवासी गांव सेखा कंला, मोगा, ओंकार सिंह निवासी अमृतसर, योगराज सिंह निवासी अमृतसर है।

**गो सवर्धन सम्मेलन अयोध्या में 28 अक्तूबर को :** चक्रवर्ती महाराज दिलीप गोवंश शाला निर्माण हेतु हवन यज्ञ सम्पन्न होगा। डॉ. रमेश भारद्वाज ने एक प्रेस नोट में बताया कि गोपाष्टमी पर गो सवधर्म सम्मेलन संपन्न होगा स्थान गोलोधाम श्री नारायण आश्रम परिक्रमा मार्ग नया घाट गोसदन वेद भवन अयोध्या में प्राप्त 10 बजे से हवन यज्ञ शुरू होगा।

Manufacturer & Supplier of
• LED Lamps
• LED Panel Light
• LED Cob Light
• LED Nite Lamps
• Diwdli Decordtive Lamps
• Street Light 50 w to 150 w
T.S. Lamba
Mob.: 9911727390
9555591366
Ravi Walli



WIDEST RANGE OF LAMPS
TANIA ELECTRICAL
47/48, East Azad Nagar, Street No-14,
Water Tank Road, Delhi-110051

GOBIND MEDICAL STORES
GMS
COUNTER DELIVERY
1715/2, MANGAL BUILDING, BHAGIRATH PALACE, DELHI-110006
Phones : 2386767, 9811457330, 9911022245,
Email : sgms_rakesh@yahoo.co.in
S.T. No. : LC/14/000409/05/71 D.L. No. 26(375)20B&21B TIN: 07820000409



Mob. 9999994910
9899822518
SHRI RAMRAJ ASSOCIATES
SAIE. PURCHASE & COLLABORATION
7/388, Swami Amar Dev Marg.
Jwala Nagar, Shahdara, Delhi-32

AMAR
BATTERIES & ELECTRICALS
Auth. Distributor PRESTOLITE
ACTION Kageen BATTERIES BATTERIES
Auth. Dealer:
EXIDE AMARON TATA
MICROTEK Su Kam
B-11, Super, Bazar, D.D.A.
Mkt. Vivek Vihar-Delhi-95
Ph. 22150396, 22159757

कोई धोखा नहीं, कोई लूट नहीं
कोलोबोरेशन पर या ठेके पर मेटीरियल सहित मकान/कोठी बनवाने के लिए मिलें
1. पूरी ईमानदारी मिलेगी।
2. मनमर्जी का तय किया हुआ मेटीरियल मिलेगा।
3. मनमर्जी का पीओपी, वुडवर्क और बाथरूम मिलेगा।
4. लैंटर और पिलर, बीम भरपूर सरिये व सिमेंट के होंगे।
5. निर्माण का पीरियड, रेट एवं शर्तें भी अन्य ठेकेदारों के मुकाबले लाभदायी आपके लिए होंगी।
6. हमारी ईमानदारी की चेकिंग हेतु आप अपना सुपरवाइजर बिठा सकते हैं। उसकी तनख्वा हम देंगे।
आलोक जिंदल-9811112571

# रात को दाह संस्कार नहीं करते हिन्दू जाने परिक्रमा के बाद क्यों फोड़ते हैं मटकी

महंत नारायण पुरी

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने चिता जलाने के तरीके में बदलाव लाने की बात की है। एक रिट पर सुनवाई के दौरान एनजीटी ने कहा चिता जलाने के वैकल्पिक इंतजाम करने होंगे। इसके लिए सरकार और धार्मिक नेताओं को मिलकर काम करना होगा। बता दें कि हिन्दू धर्म में दाह संस्कार की परंपरा है। शास्त्रों और पुराणों में भी इसका उल्लेख है। आखिर क्यों किया जाता है दाह संस्कार। जानिए इससे जुड़ कुछ दिलचस्प बातें.....

हिन्दू धर्म में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कार बताए गए हैं। इनमें आखिरी यानी सोलहवां संस्कार है मृत्यु के बाद होने वाले संस्कार। जिनमें व्यक्ति की अंतिम विदाई, दाह संस्कार के रीत रिवाज शामिल है।

दाह संस्कार से जुड़ा एक और बड़ा नियम है कि व्यक्ति की मृत्यु आगर रात में या शाम ढलने के बाद होती है तो उनका अंतिम संस्कार सुबह सूर्योदय से लेकर शाम सूर्यास्त होने से पहले करना चाहिए।

सूर्यास्त होने के बाद शव का दाह संस्कार करना शास्त्र विरुद्ध माना गया है। इसके पीछे कई कारण हैं। शास्त्रों का एक मत यह भी है कि सूर्यास्त के बाद दाह संस्कार करने से मृतक व्यक्ति की आत्मा को परलोक में कष्ट भोगना पड़ता है और अगले जन्म में उसके किसी अंग में दोष हो सकता है।

एक मान्यता यह भी है कि सूर्यास्त बाद स्वर्ग का द्वार बंद हो जाता है और नर्क का द्वार खुल जाता है।

परिक्रमा के बाद क्यों फोड़ दी जाती है मटकी.....

अंतिम संस्कार के समय एक छेद वाले घड़े में जल लेकर चिता पर रखे शव की परिक्रमा की जाती है और इसे पीछे की ओर पटककर फोड़ दिया जाता है। इस नियम के पीछे एक दार्शनिक संदेश छुपा है। कहते हं कि जीवन एक छेद वाले घड़े की तरह है जिसमें आयु रूपी पानी हर पल टपकता रहता है और अंत में सब कुछ छोड़कर जीवात्मा चली जाती है और घड़ा रूपी जीवन समाप्त हो जाता है। इस रीति के पीछे मरे हुए व्यक्ति की आत्मा को और जीवित व्यक्ति दोनों का एक दूसरे से मोह भंग

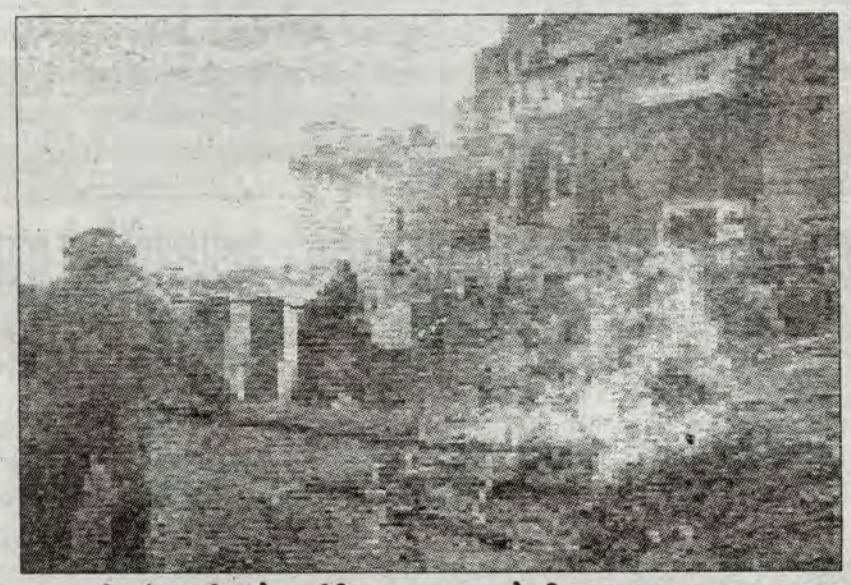

करना भी उद्देश्य होता है। क्योंकि

क्यों करते हैं मुण्डन.....

अंतिम संस्कार में दाह संस्कार के बाद सिर मुडाने का नियम है। इसके पीछे धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों ही कारण है। धार्मिक कारण यह माना जाता है कि सिर मुंडवाकर मृत व्यक्ति की आत्मा के प्रति श्रद्धा व्यक्त किया जाता है। बाल मनुष्य का श्रृंगार माना जाता है सिर मुंडवाना शोक का भी प्रतीक मानाजाता है इसलिए जिस परिवार में व्यक्ति की मृत्यु होती है वह सिर मुंडवाते हैं।

पिंडदान.....

गरूण पुराण के अनुसार मृत्यु से तेरह दिन तक जो पिंडदान कियाजाता है उससे एक कर्मो का फल भोगने वाला अंगूठे के बराबद का शरीर तैयार होता है जो वैसा ही दिखता है जैसा मरा हुआ व्यक्ति होता है। इस शरीर को ही यम के दूत कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नर्क ले जाते हैं। इसी कारण से मृत्यु के बाद तेरह दिन तक श्राद्ध और पिंडदान किया जाता है।

अकाल मृत्यु पर.....

शास्त्रों में बताया गया है कि जिनकी अकाल मृत्यु हुई है और शव दाह संस्कार के लिए नहीं उपलब्ध हो तब भी उनका दाह संस्कार किया जाना चाहिए। इसके लिए शास्त्रों में यह खास व्यवस्था है

कुश.....

कुश एक प्रकार का घास है जिसका पुतला बनाकर दाह संस्कार करना चाहिए ये उनके लिए है जिनका शव नहीं मिल पाता। इस प्रकार दाह संस्कार करने से व्यक्ति की आत्मा को शांति मिल जाती है।

देश में हिन्दू के रूप में जीना है तो राजनीति में हिन्दू के रूप में खड़े हों। हिन्दू महासभा के सदस्य बने और बनाएं।

संपादक

Aggarwal Sports
Dealers & Suppliars of sports Goods, Indoor Games, Musical Instruments, Sports Wears & Sports Shoes Specialist in: All kind of Sports Goods
Ph: 22307151, 9811667151

Vinay K. Chadha Ph: 2213534 2283534
New Calcutta Jewellers (Regd.)
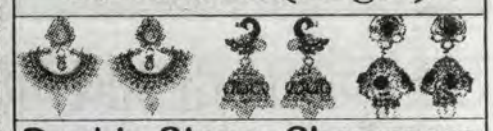
Double Storey Showroom
Gold Diamond & Silver Showroom
Shop: Chowk Phullan Wala, Bazar Kalan, Jalandhar

Authorised Sale & Service Dealers:
GENERAL LG VOLTAS HITACHI Panasonic BLUESTAR DAIKIN LUMINOUS EXIDE
Gourav Singhal
22154516
22157597
9810420396

Santosh Enterprises
25/1 SHIVA KHAND OPP VIVEK VIHAR, PHASE-II DESU OFFICE. DELHI-95
E-mail santosh1_enterprises@rediffmail.com

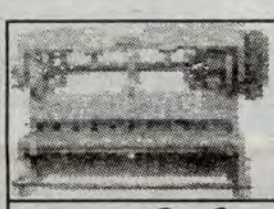
Vishal Goyal 9999359623
Ayush Jain 8800716797
Goyal Sheet Cutter
MS SHEET AVAILABLE
SS Cutting upto 6mm & Lenght 8 ft.
10335, Sadar Thana Road, Motia Khan, New Delhi-110055

KE Ph. : 23412488 23414696
Kurta Emproium
INDIA'S LEADING STORE FOR LUCKNAWI CHICKEN WORK & FANCY KURTA PYJAMA
E-mail: Lucknowsewa@rediffmail.com
12, Shanker Market, Connought Plaee, New Delhi-01

नेत्रदान महादान महाकल्याण
दृष्टि जीवन है
AGIFT ONLYYOUCANGIUE- वह अमूल्य उपहार जो आप ही दे सकते हैं मृत्योपरांत राष्ट्र को नेत्रदान करने का आज ही संकल्प करें। आप का नेत्रदान दो व्यक्तियों को जीवन ज्योति देगा। नेत्रदान संबंधी जानकारी हेतू संपर्क करें:-
रमेश चंद तूशद्या-85, जागृति एन्कलेव फेस-III दिल्ली-92
(M) 9873241771 (R) 01122145303
(DIRECTOR/COORDINATOR-EYEDONATION PROJECT)
महावीर इंटरनेशनल (रजि. स्वयं सेवी संस्था), 6550 मेन कुतुब रोड नवी करीमं, नई दिल्ली-55, फोन-01123526502, 01123510770

P.K. PAINT & HARDWARE STORE
SHUNTY AHUJA, LOKESH AHUJA
DEAKSIN:PAINT, PRIMER OBD & HARDWAREMATERIAL ETC
27/38, JWALA NAGAR, SHAGDARA, DELHI-110032
Ph. 9811470111, 9213731331, 22301603

Raman Kumar
Lead Advisor
Email:rkon62@gmai.com
RKON
m 09815893411
ISI Marka EXPORT & CONSULTANT
- ISO 9001,ISO 140001, OHSAS, 18001, ISO 22000, HACCP, ISO/TS 16949
- ISO 20000, ISO 27001, ISO 13485, ISO 10002, SA 8000, SRM Certification
- CGMP, HALAL, BRC, Certificate, GAIN Certificate, CE Mark Certificate, NABH, NABL ApprovedTest Report
- Liasoning for ISI Mark Certificate , CPWD, DGS&D ,NSIC, BEE, Star Rating, FPO , MFPO Registration
- IE Code iSBN NO. , trademark , Logo, Copy right ,& other Registration

Regd. Off.: B-III/772, New grain Market Road. Jalandhar City. 144008 (India)

सोना चांदी धाम
Aggarwal
Silver Palace
528, Maharaja Agrasen Marg, Bara Bazar
Opp. Aggarwal; Sports, Shahdra, Delhi-32
9911167151, 22307152


हमारा खाता नं. 62384620050 जंगबहादुर क्षत्रिय, मो. 9599552030 स्टेट बैंक हैदराबाद ब्रांच, ए-22 विवेक विहार दिल्ली-95 पर आर्थिक सहयोग देकर कृतार्थ करें।

संपादक, मुद्रक, प्रकाशकः जंगबहादुर क्षत्रिय, 9599552030, डॉ. संतोष राय प्रबंध संपादक-9999188800, मुरारी लाल लोहरा 9350895166, लखी चंद बंसल, नारायणा, दिल्ली 09810085046, अजय दत्त गौड़, 9911926255, कृष्णा नगर, दिल्ली-9871315350, आलोक जिंदल दिल्ली-9811112571, महेंद्र सिंह- 9312295299, दीपक चोपड़ा कार्यध्यक्ष-08459515751,
**कार्यालय- 7/377, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली-32,** कानूनी सलाहकारः डॉ. वी.पी. शर्मा, अधिवक्ता रामजन्म भूमि। किसी भी लेख से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली कोर्ट ही होगा। कोर्ट से पहले मुकदमा प्रेस काउंसिल से जीतना होगा। हमारा उद्देश्य धन कमाना बिल्कुल भी नहीं है। केवल और केवल राष्ट्र रक्षा एवं धर्म रक्षा है। प्रकाशित बालाजी आफसेट नवीन शाहदरा, दिल्ली-32।

# कुरान व बाइबिल कहते हैं जो मुझे नहीं मानते वे काफिर हैं धर्म तो केवल हिन्दू है मिलाकर देखें

संग्रहकर्ता - सेठ रोशन लाल अग्रवाल

## संख्याबल भी एक शक्ति ही है।

(आगे से)

***असाराणां हि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।***
***तृणैराबध्यते रज्जुस्तेन नागोपि बद्ध्यते।।***

हिन्दू संगठन पर किसी भी प्रकार कोई आक्षेप लगाकर उसका विरोध करने की चाट जिन्हें लगी है, उनमें से कुछलोगों को जब यह दिखाई देता है कि अन्य आक्षेप अब पूर्णतः व्यर्थ है, तब वे अस्पृश्यता निवारण एवं शुद्धि संगठन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने वाले इन दो उप अंगों पर ऐसा धूर्त आक्षेप लगाते हैं कि, अजी अछूतों के भ्रष्ट होने से हिन्दू समाज की संख्या घटी या पतित-परावर्तन के शुद्धिकार्य का स्वीकार न करने से हिन्दू समाज वर्धित नहीं हुआ तो उससे क्रू बिगड़ता है? केवल संख्या में क्या धरा है! हम जो थोड़ से लोग आज भी हिन्दू हैं, उनकी ही बहुत उन्नति करेंगे, मुट्ठी भर अंग्रेज आज संसार पर शासन कर रहे हैं। एकदर्थ वास्तव में देखा जाये तो शक्ति संख्या में न होकर समाज के व्यक्तियों में होने वाले तेजादिक गुणों में ही होती है। अतएव हिन्दू समाज के लोग विधर्म में जाते हैं इसलिये व्यर्थ में चिल्लाहट न मचाते हुए जो जाते हैं उन्हें प्रेम से जाने दो और फिर जो बचेंगे उनकी ही उन्नति करते रहो।

यहां तक तो इन आक्षेपकों की भाषा एक समान होती है पर इसके उपरांत उनमें से कुछ लोग अपने मुख थोड से फेरकर अलग तूती बजाने लगते हैं। जो आक्षेपक पुराना सो सोना ऐसा मानने वाले पुरानी रूढ़ियों के अंधानुयायी होते हैं, वे कहते हैं इस प्रकार हिन्दू समाज की संख्या घट रही है। इस भय का भूत निरर्थक सिद्ध हो जाने के कारण और केवल संख्या में कुछ भी अर्थ न होने के कारण अस्पृश्यतानिवारण एवं शुद्धि के संबंध में नयी रूढ़ियां बनाने की झंझट में आप लोगों कोनहीं पड़ना चाहिये। उपर्युक्त लोगों के संख्या में कोई अर्थ नहीं नहीं इस सिद्धांत पर से निकाला हुआ उप सिद्धांत कम से कम विसंगत तो नहीं होता है, परंतु इस आक्षेप के संबंध में वे लोग, जो निजजीवन की अन्य बातों में रूढ़ियों को ताक में रखने में नहीं हिचकिचाते। इतना ही नहीं तो रामायण या महाभारत ये ऐतिहासिक ग्रंथ न होकर केवल आध्यात्मिक रूपक मात्र हैं, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि आधुनिक राष्ट्रपुरुष तो क्या पर राम और कृष्ण को भी यदि मैं उनके समय में होता तो (और यदि वे वास्तव में देहधारी व्यक्ति होते तो भी) यह कहकर मैंने उन्हें दोष दिया होता कि, आपने रावण, कंस, अफजलखान आदि की हत्या की और शस्त्रधारण किया जो निश्चित ही हिंसात्मक एवं पापदायक हैं। ऐसा कहने वाले ये लोग जो पुरातन के शास्त्रों के एवं रूढ़ियों के कट्टर विरोधी होते हैं, वे लोग संख्या में कोई अर्थ नहीं इस सिद्धांत के आधार से अस्पृश्यतानिवारण के विरुद्ध तो चुप्पी साधे रहते हैं, पर शुद्धि के विरोध में उक्त आक्षेप का बराबर उपयोग करते हैं और कहते हैं कि अजी संख्या में क्या है, उन्हें जाने दो उन्हें वापस लेने की व्यर्थ की झंझट उठाकर विधर्मियों के विशेषतः मुसलमानों के हृदय को चोट क्यों पहुंचाते हो? यदि वे करते हैं तो उन्हें हिन्दुओं को भ्रष्ट करने दो। उनके भ्रष्टीकरण के सपाटे में से हम जो बचे हैं या बचेंगे, उनकी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आदि सभी प्रकार की उन्नति हम यदि कर लें, तो वह पर्याप्त है। केवल संख्या में क्या धरा है? वास्तविक शक्ति तो गुणों में हैं अतएव छोड़ दो उस शुद्धि को और उस संगठन को!

आक्षेपकों के उपरिनिर्दिष्ट दो उपवर्गों में से एक उपवर्ग जो यढ़ियों को अंधानुयायी होने से अस्पृश्यता एवं शुद्धि इन दोनों आंदोलनों के संबंध में आक्षेप लेता है, उसका वह आक्षेप कितना भी भ्रामक क्यों न हो, पर कम से कम सुसंगत तो होता है। परंतु इस दूसरे उपवर्ग के द्वारा संख्याबल में कुछ भी अर्थ नहीं यह आक्षेप जब केवल शुद्धि के ही विरुद्ध लगाया जाता है और वह भी विशेष रूप से मुसलमानों को हिन्दू बनाने के संबंध में तीव्रता से लगाया जाता है। तब तो वह सरासर भ्रामक होता है, इतना ही नहीं तो पूर्णतः धूर्त होता है, क्योंकि इस वर्ग के लोग अस्पृश्यतानिवारण के लिए तो अकांड तांडव करते हैं।

**(शेष अगले अंक में)**

संग्रहकर्ता - प्रो. ए.के. मल्होत्रा

## अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

**(समीक्षक)** अल्लाह बेटियों से क्या करेगा? बेटियां तो किसी मनुष्य को चाहिये, क्योंकि बेटे नियत नहीं किये जाते और बेटियां नियत की जाती हैं? इसका क्या कारण है? बताइये? कसम खाना झूठों का काम है खुदा की बात नहीं। क्योंकि बहुधा संसार में ऐसा देखने में आता है कि जो झूठा होता है वहीं कसम खात है। सच्चा सौगंध क्यों खावे?।।१०२।।

१०३-ये लोग वे हैं कि मोहर रक्खी अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके और कानों उनके और आंखों उन की के और ये लोग वे हैं बेखबर।। और पूरा दिया जावेगा हर जीव को जो कुछ किया है और वे अन्याय न किये जावेंगे।।

-मं.३। सि. १४। सू. १६। आ. १०८।१११।।

**(समीक्षक)** जब खुदा ही ने मोहर लगा दी तो वे विचारे बिना अपराध मारे गये क्योंकि उनको पराधीन कर दिया। यह कितना बड़ा अपराध है? और फिर कहते हैं कि जिसने जितना किया है उनता ही उसको दिया जायेगा, न्यूनाधिक नहीं। भला उन्होंने स्वतंत्रता से पाप किये ही नहीं किंतु खुदा के कराने से किये। पुनः उनका अपराध ही ही न हुआ। उनको फल न मिलना चाहिये। इस का फल खुदा को मिलना उचित है और जो पूरा दिया जाता है तो क्षमा किस बात की जाती है? जो क्षमा की जाती है तो न्याय उड़ जाता है। ऐसा गड़बड़ाध्याय ईश्वर का कभी नहीं हो सकता किंतु निर्बुद्धि छोकरों का होता है। १०३

१०४-और किया हमने दोजख को वास्ते काफिरों के घेरने वाला स्थान।। और हर आदमी को लगा दिया हमने उसको अमलनामा उस का बीच गर्दन उसकी के और निकालेंगे हम वास्ते उसके दिन कयामत के एक किताब कि देखेंगा को खुला हुआ।। और बहुत मारे हमने कुरनून से पीछे नूह के।।

-मं.४। सि. १५। सू. १७। आ. ८-१३।१७।।

**(समीक्षक)** यदि काफिर वे ही हैं कि जो कुरान पैगम्बर और कुरान के कहे खुदा, सातवें आसमान और नमाज आदि को न मानें और उन्हीं के लिये दोजख होवे तो यह बात केवल पक्षपात की ठहरे क्योंकि कुरान ही के मानने वाले सब अच्छे और अन्य के मानने वाले सब बुरे कभी हो सकते है? यह बड़ी लड़कपन की बात है कि प्रत्येक की गर्दन में कर्मपुस्तक। हम तो किसी एक की भी गर्दन में नहीं देखते। यदि इसका प्रयोजन कर्मों का फल देना है तो फिर मनुष्यों के दिलों, नेत्रों आदि पर मोहर रखना और पापों का क्षमा करना क्या खेल मचाया है? कयामत की रात को किताब निकालेगा खुदा तो आज कल वह किताब कहां है? क्या साहूकार की बही समान लिखता रहता है? यहां यह विचारना चाहिये कि जो पूर्वजन्म नहीं तो जीवों के कर्म ही नहीं हो सकते फिर कर्म की रेखा क्या लिखा? जो बिना कर्म के लिखा तो उन पर अन्याय किया क्योंकि बिना अच्छे बुरे कर्मों के उनको दुख सुख क्यों दिया? जो कहो कि खुदा की मरजी तो भी उसने अन्याय किया। अन्याय उसको कहते हैं कि बिना बुरे भले कर्म किये दुख सुख रूप फल न्यूनाधिक देना और उस समय खुदा ही किताब बाचेगा वा कोई सरिश्तेदार सुनावेगा? जो खुदा ही ने दीर्घकाल संबंधी जीवों को बिना अपराध मारा तो वह अन्यायकारी हो गया। जो अन्यायकारी होता है वह खुदा ही नहीं हो सकता।।१०४

१०५-और दिया हमने समूद को ऊंटनी प्रमाण।। और बहका जिसको बहका सके।। जिस दिन बुलावेंगे हम सब लोगों को साथ पेशवाओं उनके बस जो कोई दिया गया अमलनामा उसका बीच दहिने हाथ उसके।।

-मं.४। सि. १५। सू. १७। आ. ५९।६४।७१।।

**(शेष अगले अंक में)**

संग्रहकर्ता - टी.डी. चांदना आगरा

## अथ त्रयोदशसमुल्लासारम्भः

अथ कृश्चीनमतविषयं व्याख्यास्यामः

**(समीक्षक)** जब अपनी ही इच्छा से मन को फिराना स्वर्ग का कारण और न फिराना नरक का कारण है तो कोई किसी का पाप पुण्य कभी नहीं ले सकता ऐसा सिद्ध होता है और बालक के समान होने के लेख से विदित होता है कि ईसा की बातें विद्या और सृष्टिक्रम से बहुत सी विरुद्ध थीं और यह भी उसके मन में था कि लोग मेरी बातों को बालक के समान मान लें, पूछे गाछे कुछ भी नहीं, आंख मीच के मान लेवें। बहुत से ईसाइयों की बालबुद्धिवत् चेष्टा है। नहीं तो ऐसी युक्ति, विद्या से विरुद्ध बातें क्यों मानते? और यह भी सिद्ध हुआ जो ईसा आप विद्याहीन बालबुद्धि न होता तो अन्य को बालवत् बनने का उपदेश क्यें करता? क्योंकि जो जैसा होता है वह दूसरे को भी अपने सदृश बनाना चाहता ही हैं।।७८।।

७९-मैं तुम से सच कहता हूं, धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है।।

-ई.म. प. १९। आ. २३।२४।।

**(समीक्षक)** इससे यह सिद्ध होता है कि ईसा दरिद्र था। धनवान लोग उसकी प्रतिष्ठा नहीं करते होंगे, इसलिये यह लिखा होगा। परंतु यह बात सच नहीं क्योंकि धनाढ्यों और दरिद्रों में इच्छे बुरे होते हैं। जो कोई अच्छा काम करें वह अच्छा और बुरा करे वह बुरा फल पाता है। और इससे यह भी सिद्ध होता है कि ईसा ईश्वर का राज्य किसी एक देश में मानता था, सर्वत्र नहीं। जब ऐसा हो तो वह ईश्वर ही नहीं, जो ईश्वर है उसका राज्य सर्वत्र है। पुनः उसमें प्रवेश करेगा वा न करेगा यह कहना केवल अविद्या की बात है और इससे यह भी आया कि जितने ईसाई धनाढ्य है क्या वे सब नरक ही में जायेंगे? और दरिद्र सब स्वर्ग में जायेंगे? भला तनिक सा विचार तो ईसामसीह करते कि जितनी सामग्री धनाढ्यों के पास होती है उतनी दरिद्रों के पास नहीं। यदि धनाढ्य लोग विवेक से धर्ममार्ग में व्यय करें तो दरिद्र नीच गति में पड़े रहे और धनाढ्य उत्तम गति को प्राप्त हो सकते हैं।।७९।।

८०-यीशु ने उनसे कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठ के इस्राएल के बारह कुलों का न्याय करोगे।। जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।।

-ई.म. प. १९। आ. २८।२९।।

**(समीक्षक)** अब देखिये ईसा के भीतर की लीला! मेरे जाल से मरे पीछे भी लोग न निकल जायें और जिसने 30 रुपये के लोभ से अपने गुरु को पकड़ा, मरवाया वैसे पापी भी इसके पास सिंहासन पर बैठेंगे और इस्राएल के कुल का पक्षपात से न्याय ही न किया जायेगा किंतु उनके सब गुनाह माफ और अन्य कुलों का न्याय करेंगे। अनुमान होता है इसी से ईसाई लोग ईसाइयों का बहुत पक्षपात कर किसी गोरे ने काले को मार दिया हो तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कर छोड़ देते हैं। ऐसा ही ईसा के स्वर्ग का भी न्याय होगा और इससे बड़ा दोष आता है क्योंकि एक सृष्टि की आदि में मरा और एक कयामत की रात के निकट मरा। एक तो आदि से अन्त तक आशा ही में पड़ा रहा कि कब न्याय होगा? और दूसरे का उसी समय न्याय हो गया। यह कितना बड़ा अन्याय है और जो नरक में जायेगा सो अनन्त काल तक नरक भेगे और जो स्वर्ग में जायेगा वह सदा स्वर्ग भोगेगा यह भी बड़ा अन्याय है। क्योंकि अन्त वाले साधन और कर्मों का फल भी अन्त वाला होना चाहिये और तुल्य पाप व पुण्य दो जीवों का भी नहीं हो सकता। इसीलिये तारतम्य से अधिक न्यून सुख दुख वाले अनेक स्वर्ग और नरक हों तभी सुख दुख भोग सकते हैं।

**(शेष अगले अंक में)**

# शासन द्वारा मौलिक कर्तव्यों की अनदेखी

लेखक-विशन चन्द्र सेठ (सांसद हिंदू महासभा) (अगले अंक का शेष)

इसी कारण बुद्धिवादी सज्जन आज भी भारतीय विधान को विदेशी विधानों की जूठन कहा करते हैं। कारण, भारत जैसे प्राचीन देश के नव संविधान में धार्मिक परंपराये, सामाजिक जीवन की उच्चतम कल्पना, न्याय के क्षेत्र में त्वरित निर्णय और उसमें अल्प मात्रा में समय एवं धन का लगना, देश के विभिन्न धर्मों, वर्गों, क्षेत्रों के निवासियों हेतु उनकी परंपराओं, सामाजिक जीवन शैली को सुरक्षित रखना, जो अनिष्टकारी बातें समाज में विदेशी शासन द्वारा आ गयी थी, उनका निराकरण, शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को स्वस्थ प्रसन्न जीवन की कला एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों हेतु उत्साहित करना, आवश्यक पाठ्यक्रमों के साथ समाज के स्वस्थ एवं प्रसन्न अंग बनने पर बल देना आदिबातें यदि समाहित होती तो आज भारत का स्वरूप कैसा सुखद होता साथ ही राष्ट्र भाषा हिन्दी में यदि भारतीय संविधान बनता तो उसका प्रभाव निश्चय ही देशव्यापी स्तर पर हमारे गौरव का प्रतीक होता पर कैसा विलक्षण दुर्भाग्य है कि सारे संसार के सभी छोटे बड़े देशों के विधान तो उनकी भाषा, धार्मिकता एवं राष्ट्रीय परंपराओं से ओत-प्रोत होते हैं, पर भारत का विधान विदेशी भाषा में बनाया गया, जिसे आज भी देश की 5 प्रतिशत जनता भी सत्यता से पढ़ने-समझने में पूर्णतया असमर्थ है। जिस विधान को अधिकांश जनता समझने में ही समर्थ न हो उसे भारतीय संविधान कहना निश्चय ही हास्यास्पद कल्पना है।

नवन संविधान बनाते समय उपर्युक्त भावनाओं को उस समय के कर्णधारों ने नहीं अपनाया था। अतः यह नितान्त आवश्यक कार्य देश के तात्कालिक नेताओं को पूर्ण करना प्रथम कर्तव्य है ताकि वे संविधान की पुनः संक्षिप्त नव रचना राष्ट्रीय भाषा में भारतीयता के मौलिक आधार पर करें और उसे ऐसा लचीला बनाना चाहिये कि वह पूरे देश के सभी अंचलों हेतु प्रसन्नता के साथ मान्य हो और पुनः पुनः नवीन संशोधन, जो आज परंपरा सी बन गई है, उसका अवसर न आये। भारतीय संविधान में उसके जन्म काल से अब तक ७६ बार संशोधन किये गये हैं। संविधान की त्रुटियों एवं अनुपयोगिता का इससे बड़ा प्रत्यक्ष और क्या प्रमाण हो सकता है? यहां पर यह उल्लेख सामयिक प्रतीत होता है कि संसार के किसी भी देश में दो विधान नहीं बनाये जाते परंतु भारत का कैसा दुर्भाग्य है कि मुसलमानों को प्रसन्न करने हेतु मुस्लिम लां बनाकर एक हास्यास्पद परंपरा का शासन ने श्रीगणेश किया।

विधान निर्माताओं ने केंद्र एवं प्रान्तों के अधिकारों की विस्तृत सूची भी विधान में अंकित की है। सामान्यतः देखने से यह बड़ी ही सुखद परंपरा सी प्रतीत होती है। परंतु इस उदारता के अंतर्गत आये दिन लगभग सभी प्रांतों और केंद्र में अनेकों वैधानिक विवाद आते रहते हैं। उसका मूल कारण यह है कि प्रांतीय शासन को संचरित करने का अधिकार तो मुख्यमंत्री को अपने कैबिनेट के साथ होना चाहिये परंतु राष्ट्रीय योजनायें और संकल्पों में यदि प्रांत बाधा उत्पन्न करें तो देश को खण्डित करने की भावना का अनजाने बीज बन जाता है अतः मेरा निश्चित विचार है कि जो बातें पूरे देश के लिये समान रूप से आवश्यक मानी जायें उनका निश्चय ही केंद्र को अध्यादेश देने का पूर्ण अधिकार होना चाहिये। उसमें संशोधन, परिवर्तन का प्रश्न प्रान्तीय शासन को उठाने की भावना पूर्णतः वर्जित हो।

कल्पना कीजिये राष्ट्रीय छूट्टियों, शासकीय वेशभूषा, प्रदूषण आदि राष्ट्रीय प्रश्न है उनका तथा प्रांतों के बीच में जो भी विवाद हो इनका निर्णय केंद्र द्वारा जो भी किया जाये वह अंतिम माना जाये। तभी तो सुगमता से भरतीय शासन तंत्र चलेगा।

**चुनाव प्रक्रिया के सरलीकरण की आवश्यकता**

पश्चिमी देशों में प्रायः दल के उम्मीदवार ही चुनाव मैंखड़े होते हैं। उनका चुनाव घोषणा-पत्र अपनी पार्टी के विचारों के आधार पर बनाया जाता है। प्रथम तो कोई सज्जन स्वतंत्र खड़ा होने का मौलिक कारण प्रकाशित करते हैं। उन देशों में बहुधा एक सीट पर अधिक सज्जनों के खड़े होने की परंपरा नहीं होती।

सन् १९९१ में भारतीय लोकसभा की ५४३ सीटों हेतु लगभग ११,००० प्रत्याशियों का खड़ा होना, किसी एक विधानसभा सीट पर २०० से अधिक सज्जनों का खड़ा होना, क्या प्रजातंत्र का खुला उपहास नहीं है?

पिछले तीन-चार चुनावों से सारे देश में यह पीड़ादायक रोग चल पड़ा है कि असीमित मात्रा में धन का अपव्यय, मतदाता की विभिन्न प्रकार का भय दिखाना, जातिवाद का सहारा लेना, धन कमाने हेतु किसी पक्ष का सहयोग अथवा विरोध करना, निजी दुश्मनी अथवा अपने अहम की पूर्ति हेतु खड़ा होना आदि बातें केवल ५०० रुपये लोकसभा, २५० रूपये विधानसभा हेतु जमा कर अधिकार प्राप्त होने से हर प्रत्याशी को सभी पोलिंग बूथों पर स्वतः जाने एवं सहयोगी भेजने में स्वतंत्रता होने से राजकीय एवं व्यावहारिक व्यवस्था में कितनी अड़चने होती हैं, सभी को ज्ञात है।

इस खर्चीले एवं उद्दण्डता भरे वातावरण में देश के विचारशील, शिक्षित, अनुभवी देशभक्तों के खड़े होने की कल्पना ही प्रायः नष्ट हो गयी है यदि इस प्रकार के राष्ट्रीय सम्मान को नष्ट करनेवाले वातावरण का समय रहते उपचार न किया गया तो भारत की लोकसभा एवं विभिन्न विधानसभायें ऐसे गैर जिम्मेदार सज्जनों द्वारा संचालित होंगी, जो भारत की गरिमा, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था संक्षेप में देश की शोभा को ही नष्ट कर पुनः खण्डित कराने की व्यवस्था बना देंगे। अतः भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को सुरक्षित रखने हेतु चुनावी विधान में निम्न परिवर्तनों पर मनीषी सज्जनों को विचार करना चाहिये।

1-लोकसभा के प्रत्याशीको ५०,००० विधानसभा हेतु २५,००० नगर निगम एवं नगर पालिका हेतु ५,००० ग्राम पंचायतों हेतु १००० रुपये जमानत जमा करने पर ही किसी भी सज्जन को खड़े होने का अधिकार प्राप्त हो। उपरोक्त राशि आज की खर्चीली चुनाव प्रणाली में नगण्य ही है। ऐसा करने से जो ५०० या २५० रूपये जमा कर अनेक सज्जन मनोरंजन मात्र हेतु खड़े हो जाते हैं उन्हें रोकना सहज संभव बनेगा।

(शेष अगले अंक में)

**(भारतीय शासन की विकृतियां और निदान किताब से लिया गया है)**

# देश की वर्तमान दशा तथा उसका परिणाम

लेखक-के.एल. लूथरा
(अगले अंक का शेष)

इसलिये गोत्र दूसरा होने पर भी दौहित्र अपने नाना-नानी का श्राद्धतर्पण करता है, जो कि लोक में और शास्त्र में प्रसिद्ध है।

हमारे शास्त्रों में नारी-जाति को बहुत आदर दिया गया है। स्त्री की रक्षा करने के उद्देश्य से शास्त्र ने उसको पिता, पति अथवा पुत्र के आश्रित रहने की आज्ञा दी है, जिससे वह जगज-जगह ठोकरें न खाती फिरे, वेश्या न बन जाये। स्त्री नौकरी करे तो यह उसका तिरस्कार है। उसकी महिमा तो घर में रहने से ही है। घर में वह महारानी है, पर घर से बाहर वह नौकरानी है। थर में तो वह एक पुरुष के अधीन रहेगी, पर बाहर उसको अनेक स्त्री-पुरुषों के अधीन रहना पड़ेगा, अपने से ऊंचे पद वाले अफसरों की अधीनता, फटकार, तिरस्कार सहन करना पड़ेगा, जो कि उसके कोमल हृदय, स्वभाव के विरुद्ध है। वह आदर के योग्य है, तिरस्कार के योग्य नहीं। पिता, पति अथवा पुत्र की अधीनता वास्तव में स्त्री को पराधीन बनाने के लिये नहीं है, प्रत्युत महान स्वाधीन बनाने के लिये है। घर में बूढ़ी मां का सबसे अधिक आदर होता है, बेटे-पोते आदि सब उसका आदर करते हैं, पर घर से बाहर बूढ़ी स्त्री का सब जगह तिरस्कार होता है। स्त्री बाहर का काम ठीक नहीं कर सकती और पुरुष घर का काम ठीक नहीं कर सकता। स्त्री नौकरी करती है तो वहां भी वह स्वेटरें बुनती है-घर का काम करती है। पुरुष शेखी बघारते हैं कि स्त्रियां घर में क्या काम करती हैं, काम तो हम करते हैं, पैसा हम कमाते हैं। अगर पुरुष घर में एक दिन भी रसोई का काम करे और बच्चे को गोदी में रखे तो पता लग जायेगा कि स्त्रियां क्या काम करती हैं। अगर स्त्री मर जाये तो बच्चों को सास, नानी या बहन-बूआ के पास भेज देते है, क्योंकि पुरुष उनका पालन नहीं कर सकते। परंतु पति मर जाये तो स्त्री

*भ्रमन्संपूज्यते राजा भ्रमन्संपूज्यते द्विजः।*
*भ्रमन्संपूज्यते योगी भ्रमन्ती स्त्री विनश्यति।।*
*(चाणक्यनीति ६।४)*

*भ्रमण करने से राजा पूजित होताहै, भ्रमण करने से ब्राह्मण पूजित होता है, भ्रमण करने से योगी पूजित होता है, परंतु स्त्री भ्रमण करने से विनष्ट हो जाती है अर्थात् उसका पतन हो जाता है।*

*वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृत।*
*पतिसेवा गुरौ वासो गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया।। (मनु.२। ६७)*

*स्त्रियों के लिये वैवाहिक विधिका पालन ही वैदिक संस्कार (यज्ञोपवीत), पति की सेवा ही गुरुकुलवास (वेदाध्ययन) और गृहकार्य ही अग्निहोत्र कहा गया है।*

*एकइ धर्म एक व्रत नेमा।*
*कायं बचन मन पति पद प्रेमा।। (मानस, अरण्य. ५।५)*

कष्ट सहकर भी बच्चें का पालन कर लेती है, उनको पढ़ा-लिखाकर योग्य बना देती है। कारण कि स्त्री मातृशक्ति है, उसमें पालन करने की योग्यता है। मैंने छोटे लड़के-लड़कियों को देखा है। लड़की को कोई चीज मिल जाये तो वह उसको जेब में रख लेती है कि अपने छोटे बहन-भाईयों को दूंगी, पर लड़के को कोइ चीज मिले तो वह खा लेता है। कोई साधु, दरिद्र, भूखा आदमी बैठा हो तो कई पुरुष पास से निकल जायंगे, उनके मन में खिलाने का भाव आयेगा ही नहीं। परंतु स्त्रियां पूछ लेंगी कि बाबाजी, कुछ खाओगे? कारण कि स्त्रियों में दया है। उनको बालकों का पालन-पोषण करना है, इसलिये भगवान ने उनको ऐसा हृदय दिया है।

आजकल स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकार देने की बात कही जाती है पर शास्त्रों ने माता के रूप में स्त्री को पुरुष की अपेक्षा भी विशेष अधिकार दिया है-

*सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते।।*

(मनु. २।१४५)

माता का दर्जा पिता से हजार गुना अधिक माना गया है।

*सर्ववन्द्येन यतिना प्रसूवन्द्या प्रयत्नतः।।*

(स्कन्दपुराण, काशी. ११।५०)

सबके द्वारा वन्दनीय संन्यासी को भी माता की प्रयत्न पूर्वक वंदना करनी चाहिये।

वर्तमान में गर्भ परीक्षाए किया जाता है ओर गर्भ में कन्या हो तो गर्भ गिरा दिया जाता है, क्या यह स्त्री को समान अधिकार दिया जा रहा है?

मां शब्द कहने से जो भाव पैदा होता है, वैसा भाव स्त्री कहने से नहीं पैदा होता। इसलिये श्रीशंकराचार्य जी महाराज भगवान श्रीकृष्ण को भी मां कहकर पुकारते हैं-**मातः कृष्णाभिधाने** (प्रबोध. २४४)। उपनिषदों में **मातृदेवो भव, पितृदेवी भव** कहकर सबसे पहले मां की सेवा करने की आज्ञा दी गयी है। **वंदे मातरम** में भी मां की ही वंदना की गयी है। हिन्दू धर्म में मातृ शक्ति की उपासना का विशेष महत्व है। ईश्वर कोटि के पांच देवताओं में भी मातृ शक्ति (भगवती) का स्थान है। देवी भगवात, दुर्गा सप्तशती आदि अनेक ग्रन्थ मातृ शक्ति पर ही रचे गये हैं। जगत की सम्पूर्ण स्त्रियों को मातृ शक्ति का ही रूप माना गया है-

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

(दुर्गासप्तशती ११।६)

परंतु भोगी लोग मातृशक्ति को क्या समझें? समझ ही नहीं सकते। वे तो उसको भोग्या ही समझते हैं। शास्त्रों में स्त्रियों को पुनर्विवाह न करके विधवा धर्म का पालन करने के लिये कहा है तो यह उनका आदर है, तिरस्कार नहीं। धर्म पालन के लिये कष्ट सहना तिरस्कार नहीं है, प्रस्तुत तितिक्षा, तपस्या है। तितिक्षु, तपस्वी व्यक्ति का समाज में बड़ा आदर होता है। पुरुष स्त्री का तिरस्कार करे, उसको दुख दे उसको तलाक दे, उसको मारे-पीटे-ऐसा शास्त्र में कहीं नहींकहा गया है। इतना ही नहीं, स्त्री से कोई बड़ा अपराध भी हो जाय तो भी उसको मारने-पीटने का विधान नहीं है, प्रत्युत वह लम्य है।

भीष्मजी कौरव सेना की रक्षा करने वाले थे-**अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम** (गीता १।१०): परंतु दुर्योधन उनकी भी रक्षा करने के लिये अपनी सेना को आदेश देता है- **भीष्म मेवाभिरक्षन्तु भवन्तुः सर्व एव हि** (गीता १।११)। कारण कि दुर्योधन जानता था कि शिखण्डी के सामने आने पर भीष्म जी उस पर कभी शस्त्र नहीं चलायेंगे भले ही अपने प्राण चले जायें। शिखण्डी पहले स्त्री था, वर्तमान में नहीं, परंतु वर्तमान में पुरुष रूप से होने पर भी भीष्म जी उसको स्त्री ही मानते हैं और उस पर शस्त्र नहीं चलाते, प्रत्युत मरना स्वीकार कर लेते हैं-यह स्त्री जाति का कितना सम्मान है।

थोड़े वर्ष पहले ही बात है। एक बार जोधपुर के राजा सर उम्मेद सिंह जी और बीकानेर के राजा सर शार्दूल सिंह जी शिकार के लिये जंगल गये। वहां शार्दूल सिंह जी की गोली पैर में लगने से एक सिंहनी घायल हो गयी। घायल होकर वह गुर्राती हुई उनकी तरफ आयी तो उम्मेदसिंह जी ने कहा-हीरा यह क्या किया? यह तो मादा है। पता लगने पर उन्होंने पुनः उस पर गोली नहीं चलायी और खुद चेष्टा करके उससे अपना बचाव किया। यह नारी-जाति का कितना सम्मान है। शास्त्रों ने पुरुषें के लिये तो संध्योपासना, अग्निहोत्र, यज्ञ वेदपाठ आदि कई कर्तव्य-कर्म बताये हैं, पर स्त्रियों को उन सब कर्तव्य कर्मों से, पितृऋण आदि ऋणों से मुक्त रखा है। और उसको पति के आधे पुण्य की भागीदार बनाया है।

(शेष अगले अंक में)

**(देश की वर्तमान दशा तथा उसका परिणम-किताब से है)**

# सदियों पहले लिख दी गई थी एटम और साउंड की थ्योरी

## न्यूटन-डाल्टन से पहले महर्षि कणाद ने खोजी स्पीड और एटम की थ्योरी

**ब्रह्म ऋषि डॉ. संतोष राय**

लोकसभा में संविधान पर प्रतिबद्धता पर चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री के भाषण के बाद ट्विटर पर संस्कृत ट्रेंड करने लगी। दरअसल ऐसा भाषण में संस्कृत के श्लोकों के कई बार उल्लेख करने से हुआ। प्रधानमंत्री ने आइडिया ऑफ इंडिया की मिसाल देते हुए एक के बादएक कई श्लोक पढ़े।



संस्कृत के कई ग्रंथ और रचनाएं ऐसी हैं जो हजारों साल पहले लिखे गए, लेकिन आज के सांइस से कहीं ज्यादा एडवांस थी उनकी कलम और उससे भी कहीं एडवांस थी उनकी सोच। जिस साउंड सिस्टम पर आज हम गर्व करते हैं, ज्योमेट्री को पढ़ते हैं, या एटम और न्यूक्लियर थ्योरी पर आज की दुनिया गर्व कर रही है, उसे हजारों साल पहले हमारे देश के संस्कृत विद्वानों और ऋषि-मुनियों ने दुनिया के सामने रख दिया था। हजारों साल पहले ऐसा काव्य भी लिख दिया गया, जो सीधा पढ़ने पर राम कथा कहता है और उल्टा पढ़ें तो कृष्ण गाथा। एकाक्षरी श्लोक भी लिखे गए, जिनमें एक ही अक्षर के कई अलग अर्थ निकलते हैं। राजा-महाराजा वेश्याओं और उनकी चालों से खुद को कैसे बचाएं इसे भी लिख कर ग्रंथ की शक्ल दी गई।

महर्षि कणाद को वैशेषिक दर्शन का प्रवर्तक माना गया है. कणाद ने आधुनिक दौर के अणु विज्ञानी जॉन डाल्टन के भी हजारों साल पहले यह रहस्य उजागर कर दिया था कि द्रव्य के परमाणु होते हैं। उन्होंने द्वयाणुक (दो अणु वाले) तथा त्रयाणुक की चर्चा भी की। कणाद परमाणु की अवधारणा के जनक माने जाते हैं। महर्षि कणद ने ही न्यूटन से कहीं पहले गति के तीन नियम बता दिए थे।

**कणाद के सिद्धांतः** इस भौतिक जगत की उत्पति छोटे से छोटे कण परमाणुओं के संघनन से होती है।

**गति के नियमः**महर्षि कणाद ने ही न्यूटन से पूर्व गति के तीन नियम बताए थे।

वेगःनिमित्तविशेषात कर्मणो जायते।
वेगःनिमित्तापेक्षात कर्मणो जायते नियतदिक क्रियाप्रबंधहेतु।
वेगःसंयोगविशेषविरोधी।।

वैशेषिक दर्शन अर्थात् वेग या मोशन पांचों द्रव्यों पर निमित्त व विशेष कर्म के कारण उत्पन्न होता है तथा नियमित दिशा में क्रिया होने के कारण संयोग विशेष से नष्ट होता है या उत्पन्न होता है।

**ऐसे पड़ा नाम -** कणाद खेत से फसल कटने के बाद बचे हुए अन्न कणों को इकट्ठा करते थे और उन्हें खाकर अपना जीवन यापन करते थे, इसलिए उनका नाम कणाद पड़ गया। उनका जीवनयापन करते थे, इसलिए उनका नाम कणाद पड़ गया। उनका समय छठी सदी ईसापूर्व है, लेकिन कुछ लोग उन्हें दूसरी शताब्दी ईसापूर्ण का मानते हैं। ऐसा विश्वास है कि वे गुजरात के प्रभास क्षेत्र (द्वारका के निकट) में जन्मे थे।

ऋषि शूल्व का लिखा शूल्वसूत्र गणना और माप का अनोखा ग्रंथ है। दरअसल हमारे वेदों में विभिन्न तरह के यज्ञों का उल्लेख है जैसे अश्वमेघ राजसूर्य आदि। इन यज्ञों को करने के लिए यज्ञवेदियां (यज्ञ कुंड) कैसे बनाई जाएं उनका माप क्या हो, कहां किस दिशामें क्या हो सब शूल्वसूत्र में हैं। इसके अलावा आज हम नापने के लिए मीटर सेंटीमीटर जैसे मानकों को इस्तेमाल करते हैं, लेकिन शूल्व ने तब ही बता दिया था कि नाप क्या है, लंबाई-चौड़ाई, गहराई, मोटाई को नापने के सही तौर-तरीके क्या है। उसे 2nd Century BC में लिखा जाना बताया जाता है, लेकिन इसको लेकर कोई स्पष्ट तथ्य नहीं है और न ही इसकी (समय की) पुष्टि होती है।

काव्य की आत्मा ध्वनि है उसका अपना सिद्धांत है, दर्शन है धवन्यालोक इसी ध्वनि के दर्शन (फिलोंसफी) के लिए काफी फेमस है।

*(शेष अगले अंक में)*

# आजादी के 10 दिन बाद आजाद हुआ था ये शहर, राजा ने रखी थी ऐसी शर्त

**हरीदास अग्रवाल ग्वालियर**

**ग्वालियर।** 15 अगस्त 1947 को पूरा देश आजादी मिलने की खुशियां मना रहा था, लेकिन यह खुशी ग्वालियर में नहीं थी, और न ही इस दिन ग्वालियर में तिरंगा फहराया गया। इसका कारण था कि उस समय के महाराज जीवाजीराव सिंधिया विलय होने तक इसे टालना चाहते थे। बाद में विवाद सुलझा और 10 दिन बाद, 25 अगस्त को ग्वालियर में तिरंगा फहराकर आजादी का जश्न मनाया गया। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ था। ग्वालियर स्टेट के महाराज सिंधिया थे, जिनसे विवाद नहीं सुलझा और विलय कुछ दिन टल गया। ﴾ि२'१﴿ इसी पहलू को सामने ला रहा है।



14–15 अगस्त 1947 की दहलीज पर जब अंग्रेजों ने भारत की बागडोर औपचारिक तौर पर भारत की जनता के सुपुर्द की, तो 15 अगस्त की सुबह से सारे देश में तिरंगा फहरा कर जश्न मनाया गया। आजादी मिलने की खुशी ग्वालियर में भी उमड़ रही थी। जश्न मनाने की सारी तैयारियां थीं। जश्न घर–घर में मनाया भी गया, लेकिन संवैधानिक विवाद के चलते तिरंगा नहीं फहराया जा सका।

दरअसल उस वक्त रियासतों के विलय की औपचारिकता पूरी नहीं हुई थी। ग्वालियर के तत्कालीन महाराजा जीवाजीराव सिंधिया का मानना था कि जब तक देश का संविधान सामने नहीं आता और रियासतों का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता तब तक रियासत में सिंधिया राजवंश के स्थापित प्रशासन को ही माना जाएगा।

## महाराज चाहते थे सिंधिया राजवंश का झंडा फहरे

महाराज चाहते थे कि सिंधिया रियासत का ध्वज ही आजादी पर फहराया जाना चाहिए।,लेकिन कांग्रेसी ये मानने को तैयार नहीं थे, वो तिरंगा फहरा कर ही आजादी का समारोह मनाना चाहते थे।

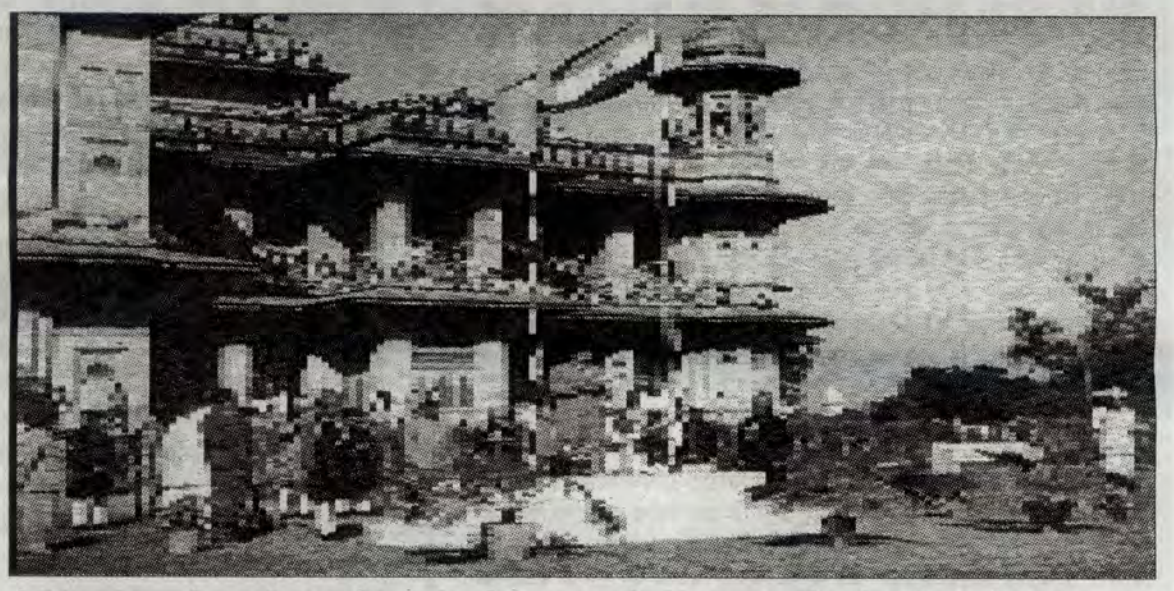

लिहाजा 15 अगस्त के दिन निजी तौर पर तो ग्वालियर की जनता ने आजादी का जश्न मनाया, लेकिन न तिरंगा फहराया जा सका, न सिंधिया राजवंश का ध्वज।

## 25 अगस्त को फहरा ग्वालियर में तिरंगा

बाद में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू तक यह बात पहुंची और उस समय के गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने मामला सुलझाया। इसके बाद 25 अगस्त को ग्वालियर में आजादी का जश्न मना।

महाराज जीवाजीराव सिंधिया ने नौलखा परेड ग्राउंड में सिंधिया राजवंश का ध्वज फहराया, जबकि तत्कालीन मुख्यमंत्री लीलाधर जोशी ने किला गेट पर ध्वज को फहराया। इस समारोह में कांग्रेसी नेता उपस्थित थे। इसके 10 महीने बाद खुद जवाहर लाल नेहरू ग्वालियर आए और महाराज जीवाजीराव सिंधिया को मध्य भारत प्रांत के राजप्रमुख के रूप में शपथ दिलाई।

# म्यांमार में एक गड्ढे से मिली 45 हिंदुओं के शव

हिन्दू महासभा के अध्यक्ष जितेंद्र विसेन ने एक प्रेस नोट में बताया कि म्यांमार की सेना ने रोहिंग्या मुस्लिमों द्वारा हिंदुओं की सामूहिक हत्या करने का दावा किया था। हालांकि, इसकी पुष्टि नहीं हो सकी थी, लेकिन म्यांमार की सेना ने मॉन्गदा टाउनशिप के पास स्थित गांव से करीब 45 हिंदुओं की बॉडीज बरामद कर ली हैं। सेना की रिपोर्ट के मुताबिक, गांव के अब भी 48 हिंदू लापता हैं और इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इन्हें भी रोहिंग्या आतंकियों द्वारा कत्ल कर दिया गया है।

सेना इलाके में सर्च अभियान चला रही है। म्यांमार सेना प्रमुख की वेबसाइट पर जारी बयान के मुताबिक, 'रखाइन राज्य में सुरक्षा कर्मियों को 45 हिंदुओं के शव मिले हैं, जिनका बंगाली आतंकवादियों द्वारा कत्ल किया गया।' म्यांमार सेना के अनुसार हजारों हिंदू उन गांवों से भाग चुके हैं,जहां वो रह रहे थे, क्योंकि रोहिंग्या आतंकवादियों द्वारा इन्हें निशाना बनाया जा रहा है। हाल ही में म्यांमार से भागकर बांग्लादेश में रिफ्यूजी बनने वाले हिंदू परिवारों ने भी रोहिंग्या मुसलमानों के आतंकी गुट पर नरसंहार के आरोप लगाए थे। कम से कम 100 हिंदुओं की हत्या की गई और उनकी लाशों को कीचड़ से भरे गड्ढों में फेंक दिया गया था। घटना की चश्मदीद एक महिला ने कहा– मेरे पति, दो भाई और अनगिनत पड़ोसियों की गला रेतकर हत्या कर दी गई। हिंदुओं के गांव में रोहिंग्या आतंकियों ने आग लगा दी थी।

**गांवों पर हमले के बाद आर्मी ने लिया एक्शन :** म्यांमार की आर्मी का आरोप है कि 25 अगस्त को रोहिंग्या आतंकी गुट ने एक पुलिस स्टेशन पर हमला किया। कुछ पुलिसवाले भी मारे गए। इसके बाद इन लोगों ने हिंदुओं के गांवों पर हमला कर दिया। इन घटनाओं के बाद म्यांमार की आर्मी ने एक्शन लिया। अब रोहिंग्याओं को यहां से निकाला जा रहा है। हालांकि, दिक्कत की बात ये है कि भारत समेत कई देश इन्हें अपने देश में रिफ्यूजी का दर्जा देने के लिए तैयार नहीं हैं। म्यांमार से भागे ज्यादातर लोग बांग्लादेश पहुंच रहे हैं। क्योंकि, म्यांमार और बांग्लादेश के बीच दूरी काफी कम है। इन लोगों ने म्यांमार की आर्मी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। कई संगठन म्यांमार आर्मी की कार्रवाई को ज्यादती बता रहे हैं। दूसरी ओर, म्यांमार आर्मी का कहना है कि उसने सिर्फ उन रोहिंग्याओं के खिलाफ कार्रवाई की है, जो आतंकी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। उसका आरोप है कि ये आतंकी संगठन सिर्फ हिंदुओं और बौद्धों को निशाना बना रहे हैं।

**कौन हैं रोहिंग्या मुस्लिम :** रोहिंग्या मुस्लिम प्रमुख रूप से म्यांमार के अराकान प्रांत में बसने वाले अल्पसंख्यक हैं। इन्हें सदियों पहले अराकान के मुगल शासकों ने यहां बसाया था। वर्ष 1785 में बर्मा के बौद्ध लोगों ने देश के दक्षिणी हिस्से अराकान पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने हजारों की संख्या में रोहिंग्या मुस्लिमों का कत्ल कर उन्हें इलाके से बाहर खदेड़ दिया इसी के बाद से बौद्ध धर्म के लोगों और रोहिंग्या मुस्लिमों के बीच से हिंसा और कत्लेआम का दौर शुरू हुआ, जो अब तक जारी है।

# सिंगापुर में बदहाली के बीच ऐसे भी रहते हैं इंडियन

पूरी दुनिया में सिंगापुर आलीशान इमारतों, बेहतर लाइफस्टाइल और खूबसूरती के लिए जाना जाता है। इस कारण हर साल लाखों सैलानी यहां घूमने के लिए आते हैं। लेकिन, इससे इतर इसका एक दूसरा पहलू भी है, जिसके बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं। दरअसल, चकाचौंध से दूर यहां कई ऐसे स्लम एरिया है, जहां पर भारत सहित अन्य देशों से मजदूरी करने गए लोग बदहाली के बीच रहते हैं।

दुनियाभर के अलग–अलग फोटोग्राफर ने यहां के कुछ क्षेत्रों में जाकर लोगों की लाइफ को अपने कैमरे में कैद किया है। बता दें कि इन एरिया में भारत, बांग्लादेश, चीन, म्यांमार, थाइलैंड और फिलिपिन्स के मजदूर दिन भर काम करने के बाद आराम फरमाते हैं, लेकिन उनका ये घर जानवरों के तबेले से कम नहीं है। आपको जानकर हैरानी होगी लोगों के रहने के लिए डबल डेकर बेड बनाए गए हैं, जिनमें 7 मजदूर एक रूम में साथ रहते हैं। वहीं, तुअस नाम का एक एरिया ऐसा है, जहां करीब 17 हजार मजदूर एक साथ रहते हैं। हालांकि, इनके लिए मेडिकल और शॉपिंग की अलग से व्यवस्था की गई है।

यहां रहने के लिए मजदूरों को 14 हजार रुपए पर महीने देने होते हैं। हालांकि, इससे अलग कई भारतीय ऐसे भी हैं, जो काफी लग्जरियस लाइफ भी जीते हैं। बांग्लादेश के रहने वाले एक मजदूर का कहना है कि वो करीब 46 हजार रुपए हर महीने कमाते हैं, लेकिन ज्यादातर पैसे उन्हें घर भेजना पड़ जाता है। ऐसे में बड़ी मुश्किल से उनका गुजारा हो पाता है। हालांकि, कई मजदूरों को का यह भी कहना है कि उन्हें इतने पैसे भी नहीं मिल पाते कि सही से अपनी जिंदगी जी सके।

# पूरे देश से 5 साल पहले आजाद हो गया था भारत का यह गांव

सं. सुब्रामण्यम राजू

**कर्नाटक का ईसुरू गांव पूरे देश से 5 साल पहले आजाद हो गया था।**

पूरा देश मंगलवार यानी कल 71वां स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाएगा। आज तक आजादी से जुड़े कई किस्से और कहानियां आप सबने सुने होंगे। लेकिन, आज हम आपको एक ऐसे गांव के बारे में बताने जा रहे हैं, जो पूरे देश से 5 साल पहले आजाद हो गया था। इस गांव का नाम है ईसुरू (Issuru), जिसने 1942 में ही ब्रिटिश शासन से अपने आप को आजाद घोषित कर दिया था।

कर्नाटक के शिमोगा जिला स्थित ईसुरू भारत का ऐसा गांव है, जिसने सबसे पहले ब्रिटिश शासन से अपने आपको आजाद घोषित किया था। 12 अगस्त, 1942 का वो ऐतिहासिक दिन, जब इस गांव के लोगों ने अंग्रेजों को लगान देने से इनकार कर दिया था और पूर्ण आजादी की मांग की थी। इस गांव के सबसे बुजुर्ग स्वतंत्रता सेनानी 111 साल के हुचुरैय्यपा (Huchuraayapa) बताते हैं, ह्य12 अगस्त को भरी दोपहरी में गांव के बाजार में काफी संख्या में लोग जमा हो गए। दोपहर बाद ब्रिटिश फौज हमसे लगान लेने के लिए पहुंच गई। लेकिन, सभी ने एक स्वर में लगान देने से इनकार कर दिया। क्योंकि हमारे पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं था और हमने उनसे पूर्ण आजादी की मांग की ह्ल वो बताते हैं, इस मांग के बाद वहां खामोशी छा गई और हम सब डरे हुए थे कि कहीं ब्रिटिश सैनिक हमपे लाठी–डंडे न बरसाने शुरू कर दें। लेकिन, उस वक्त ऐसा कुछ नहीं हुआ उन्होंने हमसे बात की और हमारे डिमांड के बारे में पूछा। उस दौरान हम सब गांधीवादी ड्रेस में थे और हमने खुद को स्वतंत्रता सेनानी बताया। हमने उनसे एक ही डिमांड की पूर्ण आजादी की। कुछ देर के बाद वो वहां से चले गए। इस विरोध के बाद गांव वालों को हौसला काफी बढ़ गया और उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों का हर चीज में विरोध करना शुरू कर दिया। 29 सितंबर, 1942 को आखिरकार वो ऐतिहासिक दिन आ ही गया जब ग्रामीणों ने ब्रिटिश अधिकारियों को ईसुरू में प्रवेश करने से रोक दिया और वीरभद्रेश्वर मंदिर के ऊपर तिरंगा फहराकर गांव को ब्रिटिश शासन के आजाद घोषित कर दिया। हालांकि, कुछ दिन बाद ब्रिटिश सरकार ने काफी संख्या में उस गांव में पुलिसबल भेजा। परिणाम ये हुआ कि दोनों के बीच लड़ाई शुरू हो गई, जिसमें गांव वालों ने एक रेवेन्यू ऑफिसर और एक पुलिस ऑफिसर की हत्या कर दी। इस घटना के बाद गांव के करीब 50 स्वतंत्रता सेनानी जंगल में भाग गए। लेकिन, जल्द ही उनलोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें से 5 स्वतंत्रता सेनानी 8,9 और 10 मार्च 1943 को शहीद हो गए। इसके बाद आंदोलन और तेज होता चला गया और कई स्वतंत्रता सेनानी, महिलाएं और बच्चे आजादी की खातिर शहीद हो गए। आखिरकार 5 साल बाद पूरे देश के साथ–साथ यह गांव भी आजाद हो गया।

# नेहरु-गांधी परिवार बेनकाब

**लेखक-हरिराम गुप्ता**

पिछली सात पुश्तों से तथाकथित नेहरु-गांधी खानदान भारतीयों के साथ धोखा करके सत्ता पर कब्जा किए बैठा है। आज देश में जितनी समस्याएं हैं, इनकी देन है, चाहे कश्मीर समस्या हो, आतंकवाद की, देश के बंटवारे के जिम्मेदार यही खानदान है। जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद इन्हीं की पैदाइश है, आज चीन हमारी जमीन पर इन्हीं की बदौलत बैठा है। कश्मीर, मिजोरम नागालैंड और उत्त-रपूर्वी प्रांत टूट की कगार पर है। लेकिन सत्ता बचाने के लिए यह परिवार कुछ भी कर सकता है, भारत की राजधानी दिल्ली में गोरक्षा आंदोलन 1966 में गोपा अष्टमी के दिन विश्व के इतिहास में इस धरना आंदोलन नहीं हुआ इसको दबाने के लिये प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आदेश पर संतों पर गोली चलाकर हजारों साधु संतों की हत्या का अपराध किया था। जो भी इनके रास्ते में आया, इन्होंने उसका सफाया कर दिया और अपने रास्ते से हटा दिया सुभाषचंद्र बोस, माधवराव सिंधिया, राजेश पायलट तथा लालबहादुर शास्त्री इसके उदाहरण हैं। सिखों के खून से इनका पंजा रंगा हुआ है। इस खानदान को देश से कोई लगाव नहीं है। यह परिवार देश की हिन्दू छवि नष्ट करने पर तुला है। लेकिन इनके चाटुकार कांग्रेसी लगातार यह सिद्ध करने में लगे रहते हैं कि, देश को आजादी सिर्फ इसी खानदान की बदौलत मिली है, इसलिए सिर्फ इसी परिवार को देश पर हुकुमत करने का दैवी अधिकार प्राप्त है। इनसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति कोई हो भी नहीं सकता। इसलिए भविष्य में भी इनकी औलाद ही राज करेगी। लेकिन इस खानदान की असलियत बहुत कम लोगों को पता है। लोग इन्हें कश्मीरी ब्राह्मण, हिन्दू, पंडित या महात्मा गांधी का संबंधी, मानते हैं लेकिन यह सब झूठ है। आर.एस. एंड्रयू ने अपनी किताब 'ऐ लैंप फॉर इंडिया' में इनकी पूरी जानकारी दी है, जिसके मुताबिक इस खानदान का प्रारंभ एक मुसलमान से होता है। जिसका पूरा रिकॉर्ड मौजूद है। उस व्यक्ति का नाम गयासुद्दीन गाजी था। जो एक मुगल था।

1.**गयासुद्दीन गाजी**- इसके पुरखे तैमूरलंग के साथ यहां आए थे और यहीं रह गए थे। इन्हें गाजी की उपाधि दी गई थी। जिसका मतलब है, काफिरों (गैर मुस्लिम) को मारने वाला। बहादुर शाह जफर के राज्य में गयासुद्दीन दिल्ली का कोतवाल था। सन् 1856 में अंग्रेजों ने बहादुर शाह को कैद करके रंगून भेज दिया और उन सभी लोगों को गोली मारनेका हुक्म दे दिया जो, बादशाह के वफादार थे। इसके लिए सिख और गोरखा फौज को लगाया गया था। उन्हीं में से कुछ लोग जान बचाकर इलाहाबाद और आगरा चले गए। गयासुद्दीन इलाहाबाद आ गया और अपना नाम बदल कर गंगाधर रख लिया। वैसे धर कश्मीरियों का उपनाम होता है, इसलिए वह खुद को कश्मीरी बताने लगा। चूंकि ईरानियों और कश्मीरियों का रंग एक सा होता है, इसलिए किसी को शक नहीं हुआ। एक नेहर के पास रहने के कारण उसने अपने नाम के आगे नेहरु शब्द और जोड़ लिया। इलाहाबाद में रहते हुए गयासुद्दीन 77 मीरगंज के कोठे की दलाली करने लगा। साथ ही एक वकील के मुख्त्यार के सहायक के रूप में भी काम करने लगा, लेकिन उसमें कोई खास कमाई नहींहो रही थी। उसने एक मुस्लिम लड़की से शादी भी की थी। जिससे मोतीलाल पैदा हुआ।

2. **मोतीलाल**- इसका बचपन कोठे में ही गुजरा और वहीं कोठे की दलाली से कमाइ करता रहा। इसी दौरान इसकी दोस्ती मुबारक अली नाम के वकील से हुई, जो काफी पैसे वाला और शौकीन तबियत का था। इसके लिए मोतीलाल एक गरीब लड़की थुस्सू को शादी करके लाया, जिसका नाम रसने स्वरूप रानी रख दिया। और उसे मुबारक अली के हवाले कर दिया। मुबारक अली ने उसे अपने मकान इरशाद मंजिल में रख लिया, लेकिन जब वह गर्भवती हो गयी तो, बच्चा मेरे घर में पैदा होगा तो, यह मेरी विरासत में हक मांगेगा। मजबूरन मोतीलाल उसे कोठे पर ले गया। जहां जवाहर लाल का जन्म हुआ था। मोतीलाल की एक मुसलमान रखैल भी थी। जिससे शेख अब्दुल्ला, सय्यद हुसैन और रफी अहमद किदवई पैदा हुए। इस तरह जवाहर लाल और शेख अब्दुल्ला सौतेले भाई थे। और यही कारण है कि आज तक कश्मीरी समस्या का समाधान नहीं हो सका। मोतीलाल और थुस्सू से दो लड़कियां हुई। विजयलक्ष्मी और कृष्णा।

**नेहरु-गांधी परिवार सेकुलर या वर्णसंकर किताब से लिया गया है।**

**जारी.....(शेष अगले अंक में)**

श्री महालक्ष्मी नमः

रिद्धी सिद्धि शुभम् लाभम्

# दीपावली पूजन

## धनवान कैसे बनें

कुबेर एवं लक्ष्मी यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 8 | 1 | 6 |
| 3 | 5 | 7 |
| 4 | 9 | 2 |

गणेशाय नमः

ॐ वक्र तुण्ड, महाकाय, सूर्य कोटिः सम प्रभ।
निर्विघ्नम् कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।1।
ओ३म् मंगलम् भगवान विष्णुः मंगलम् गरूड़ध्वजः।
मंगलम् पुंडरीकाक्षः मंगलायतनो हरिः।2।
महालक्ष्मये, नमस्तुभ्यम्, नमस्तुभ्यम् सुरेश्वरि।
हरि-प्रिये, नमस्तुभ्यम्, नमस्तुभ्यम् दयानिधे।3।
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवेसर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।4।
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्नयावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपामश्विनौ व्यात्तम्। ईषणन्निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।5।

*महालक्ष्मी जी की कृपा हेतू इसे पूजा स्थान पर रखें। धूप-दीप जलाकर प्रतिदिन प्रातः सायं इन देवराज इंद्रकृत सिद्ध मंत्रों का जाप करें।*

1. नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
2. नमस्ते गरूड़ारूढ़े, कोलासुरभयंकरि।
सर्व पाप हरे देवि, महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
3. सर्वज्ञे सर्ववरदे, सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्व दुख हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
4. सिद्धिबुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
5. आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योग सम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
6. स्थूलसूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महा पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
7. पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणी।
परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
8. श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातः महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
9. महालक्ष्मयष्टकस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।।
10. एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः।।
11. त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महारात्रुविनारानम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा।।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। ईश्वरीय वाणी है। ऋग्वेदोक्त लक्ष्मी सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।
*तां म आवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्।।2।।*
अश्व पूर्वां रथ मध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपहवये श्रीर्मा देवीर्जुषताम्।।3।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वयेश्रियम्।।4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भू तोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति मृद्धिं ददातु में।।7।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठां अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिं असमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।8।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये मिश्रम्।।9।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।10।। कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।। आपः सृजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।। आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो म आवह।।13।। आर्द्रा यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।14।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्व पुरुषानहम्।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।15।।
*ओउम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्*
*ॐ ऐ ह्रीं कलीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॐ।।*

## लक्ष्मीजी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु धाता।।ॐ जय।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही हो जग-माता।
सूर्य-चंद्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता।।ॐ जय।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋषि-सिद्धि धन पाता।।ॐ जय।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।।ॐ जय।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।।ॐ जय।।
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खानपान का वैभव, सब तुमसे आता।।ॐ जय।।
शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।ॐ जय।।
श्री महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।।
ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।

**अथ महाराजा श्री विक्रमादित्य संवत् 2074 कार्तिक प्रविष्ठे अमावस्या पंचदशी तदानुसार 19-10-2017 को समस्त परिवार द्वारा धन, धान्य, आरोग्य, सुख, शांति, धर्म, कीर्ति, शोभा, स्थान, आयु तथा मनोवांछित फल देने वाली कल्याणमयी महालक्ष्मी जी का पूजन वर्ष भर सुखम् शुभम् लाभम् प्राप्ति के लिए सम्पन्न हुआ।**

1. लक्ष्मी मेहनती की साथी है। पाप कर्मों से बचते हुए ईमानदारी से मन बुद्धि एवं शरीर से कर्म करने पर समय से पहले और भाग्य से बहुत ज्यादा मिलता है। यहां तक संसार की सबसे कठिन चीज मोक्ष भी मिल सकती है। फिर धन संपत्ति, संतान, राजगद्दी की तो बात ही क्या है। यह पक्का है निश्चित है। 2. पृथ्वी पर पांच जीवित देवता हैं। 1. माता, 2. पिता, 3. गुरू, 4. अतिथि, 5. पति वा पत्नी, (एक दुसरे के लिये) यदि ये प्रसन्न नहीं तो ईश्वर आपसे कैसे प्रसन्न हो सकता हैं? 3. यदि आपकी गृह लक्ष्मी (पत्नी) प्रसन्न नहीं है तो धन लक्ष्मी आपसे कैसे प्रसन्न हो सकती है? 4. यदि आप वैष्णव (शाकाहारी) नहीं हैं तो वैष्णों माता कभी भी आपसे प्रसन्न नहीं हो सकती। 5. आज से ही छोड़ दो- (अ) अण्डा (विष्ठा खाने वाले मुर्गे-मुर्गी का मल-मूत्र) मांस (लाशें)। (ब) शराब (नशे) (स) परनारी से संबंध (द) जुआ (घ) दुष्ट की संगति। **नोट**-इन्हें छोड़ना कोई पुण्य कर्म नहीं है बल्कि नकारात्मकता (नीचे) से जीरो पर आना है। 6. अपने व्यापार की उन्नति हेतू भगवान को सेठ बिरला की तरह लाभ का 5 से 25 प्रतिशत का साझेदार बनायें। इस लाभ को अपने गरीब रिश्तदारों को रोजगार देने पर या धर्मरक्षा पर खर्च करें। 7. जीवन में तीन चीजें जरूरी हैं, पैसा, स्वास्थ्य, इज्जत। सोचो! शराब इन तीनों को ही नष्ट करती हैं। 8. जहां सुमति तहं संपत्ति नाना। जहां कुमति तहं विपत्ति निदाना। मां लक्ष्मी की कृपा चाहते हो तो घर में कलेश मत करो। पूजा-पाठ, वीरों, देवचित्रों, धार्मिक भजनों से धार्मिक वातावरण बनाओ। 9. उन्नति के तरीके ढूंढो, ग्राहकों की मांग को देखो। ग्राहकों से प्यार से बोलो। ग्राहक भगवान का रूप होता है। हमारा अन्नदाता है। उससे धोखा न करें। भूलना मत-बेईमानी से कमाया हुआ एक-एक पैसा आंतडियां फाड़कर बाहर निकलता है। 10. राष्ट्र की पुकार-लव इंडिया ओर लीव इंडिया। दुष्टों/ भ्रष्टाचारियों/ चरित्रहीनों/ राष्ट्रद्रोहियों/ नशेडियों को कभी निमंत्रण, गुणगान सम्मान मत दो। 11. सृष्टि रचियता ईश्वर का सर्वोत्तम (निज) नाम ओ३म् है। यह सबसे पवित्र/कल्याणकारी एवं बड़ा मंत्र/गुरुमंत्र है। ओ३म् संसार की सबसे बड़ी डिक्शनरी/ लाइब्रेरी है। ओ३म् के उच्चारण से स्वतः ही कपालभाती, प्राणायाम हो जाता है जिससे मोक्ष प्राप्ति हेतु आयु और आरोग्य बढ़ता है।

*की ओर से आप सभी को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी द्वारा राक्षसों का विनाश करने के उपरान्त अयोध्या आगमन की प्रसन्नता पर मनाये जाने वाले दीपावली पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं।*
*रामनाथ लूथरा एवं अर्थव लूथरा*

## गीता जयंती 30 नवंबर को जालंधर में

अखिल विश्व गीता महामण्डल के तत्वावधान में 34वां श्री गीता जयंती शोभा यात्रा 30 नवंबर 2017 (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष मोक्षदा एकादशी) दिन गुरुवार को दोपहर 2 बजे श्रीराम चौक कंपनी बाग जालंधर से प्रारंभ होगी। पं. रवि शंकर शर्मा ने बताया की श्रीमद्भगवद्गीता महासम्मेलन प्रातः 10 बजे से 1.30 बजे दोपहर तक हिन्द समाचार ग्राउंड में होगा। जिसमें देश भर से भगवद्गीता जी के विद्वान पाधारेंगे। शोभा यात्रा मार्गः भव्य शोभा यात्रा श्रीराम चौक से प्रारंभ होकर भगवान वाल्मीकि चौक, पटेल चौक, माई हीरांगेट, अड्डा टांडा, अड्डा होशियारपुर, रिवंगरां गेट, भगत सिंह चौक, फगवाडा गेट, मिलाप चौक से होती हुई भगवान श्री कृष्ण जी की आरती के साथ श्री सनातन धर्म जनता मंदिर पक्का बाग में संपन्न होगी। शोभा यात्रा का शुभारंभ पद्मश्री श्री विजय चोपड़ा (मुख्य संपादक : हिन्दू समाचार पत्र समूह) करेंगे।

## राजीव पार्क कनाट प्लेस बना आशिकों का अड्डा-चोपड़ा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के मंत्री दीपक चोपड़ा ने एक प्रेस नोट में बताया है कि इंदिरा चौक से आशिक इकट्ठे होकर राजीव पार्क में प्रवेश कर 12 वर्ष से लेकर 22 वर्ष के लड़के-लड़कियां खुले आकाश के नीचे खुल्लम-खुल्ला रंगरलियां मनाते देखे जा सकते हैं। उन्होंने बताया है कि कांग्रेस के मंत्री पी. चिदंबरम ने कहा कि लड़का-लड़की कहीं भी बात करते हैं तो कानून उन पर प्रतिबंध नहीं लगाया जायेगा इस पर सोनिया जी व राहुल गांधी मौन रहे इस विषय पर भाजपा और विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल भी मौन रहे हैं। आगे चोपड़ा ने बताया कि दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने भी इस बयान को विराट रूप देने के लिए दिल्ली के सभी पेशाब घरों में चरित्र हीन चित्र एवं कंडोम के डिब्बे भी रखवाए गये। आज नई पीढ़ी राजीव पार्क में रंगरलियां मनाने की छूट दी है। यह चरित्र हीनता का खेल राष्ट्रपति भवन से एक कि.मी. दूर पार्लियामेंट, राज्यसभा इलेक्ट्रॉलिक मीडिया, सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, सीबीआई इन सभी ने इस आश्चर्य जनक चरित्र हीनता पर मौन क्यों रहे। क्या यह राष्ट्रहित है या राष्ट्र का पतन जनता को जबाव दें। यह सब मोन क्यों।

## आतंकियों की सहेली स्वाति मालीवालः त्रिपाठी

स्वामी अयोध्या त्रिपाठी ने कहा कि स्वाति मालीवाल जो अपने को फौजी की बेटी बता रही है वास्तव में फौजियों को जान से मारने वाले नक्सली मिशिनरी आतंकवादी बिनायक सेना की साथी है। श्री त्रिपाठी खूंखार नक्सली मिशिनरी आतंकवादी बिनायक सेन को रिहाई और इस फौजियों के हत्यारे देशद्रोही के खिलाफ छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा दायर मुकदमा वापिस लेने के लिये एक संयुक्त वक्तव्य नक्सली मिशिनरी आतंकवादियों के साथियों द्वारा जारी किया गया। जिसे जारी करने वाले सूची में अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसौदिया के साथ-साथ स्वाति मालीवाल का भी नाम है। इतना ही नहीं इस खूंखार नक्सली आतंकवादी बिनायक सेन को 24 दिसंबर 10 को छत्तीसगढ़ न्यायालय द्वारा देशद्रोह का जुर्म साबित होने के बाद आजीवन कारावास की सजा सुनाये जाने के बाद भी यही स्वाति मालीवाल अपने साथी मनीष सिसौदिया और अरविंद केजरीवाल के साथ मिलकर 28 दिसंबर 10 को न्यायालय का फैसला गलत बताकर इस देशद्रोही की रिहाई की मांग भी करती ह। इन सबकी सी.बी.आई. जांच कराई जाए।

## देश की शर्मनाक राजनीत की पराकाष्ठा पर कांग्रेस की देन-बाबा

अखिल भारत हिन्दू महासभा कार्याध्यक्ष बाबा नन्दकिशोर मिश्रा ने एक प्रेस नोट में बताया कि कांग्रेस की राजनीति जब देश के विभाजन की शर्मनाक घटना पर ही आधारित है तो वह आज कैसे इससे पीछे हट सकती है। उसने पिछड़ा वर्ग के आरक्षण में मजहब के आधार पर आरक्षण देकर जनता को आपस में लड़ाने उससे वोट प्राप्त करने की एक ओर कुचाल चली है जो देश के विभाजन को बढ़ाने वाली है। परंतु केंद्र सरकार को इससे कोई मतलब नहीं है। उसको तो केवल शासन करना है उसको राष्ट्रभक्ति से क्या लेना है। राष्ट्रभक्ति तो राष्ट्रभक्तों में थी जिन्होंने देश के लिए अपनी शहादत देकर देश के प्रति अपना फर्ज निभा दिया और अब तो देश पर राज करने वाले अधिकांश नेता कांग्रेसी ही थे।

## कश्मीर मुद्दे के समाधान की कोशिश में हूं : वठ चीफ

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख एंतोनियो गुतारेस ने कहा है कि कश्मीर मुद्दा सुलझाने की खातिर भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों के साथ मुलाकात के जरिये वह दोनों देशों के बीच वार्ता शुरू करवाने के प्रयासों में जुटे हैं। दरअसल, एक कार्यक्रम में गुतारेस से पूछा गया था कि क्या वह कश्मीर विवाद के हल की खातिर भारत और पाकिस्तान के बीच वार्ता शुरू करवाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके जवाब में उन्होंने हंसते हुए कहा, तो आपको क्या लगता है कि मैंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के साथ 3 बार और भारत के प्रधानमंत्री के साथ 2 बार मुलाकात क्यों की है। महासचिव की आलोचना में कहा जाता है कि कश्मीर मुद्दे को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव कम करने के काम से वे बच रहे हैं और कोई कार्रवाई करने से हिचकिचा रहे हैं। इसके जवाब में गुतारेस ने कहा, ह्यवह व्यक्ति, जिसपर कुछ भी नहीं करने के आरोप लगते हैं, उसने ढेर सारी अहम मुलाकातें की हैं। जनवरी में पदभार संभालने के बाद से गुतारेस ने मंगलवार को यूएन हेडक्वार्टर में अपने पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में संवाददाताओं को संबोधित किया। उनसे नियंत्रण रेखा पर भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव और उनके पदभार संभालने के बाद से सीजफायर की घटनाओं के बारे में सवाल किए गए थे। गौरतलब है कि जून महीने की शुरुआत में सेंट पीट्सबर्ग अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मंच से इतर मोदी और गुतारेस ने मुलाकात की थी। मुलाकात के दौरान मोदी ने आतंकवाद जैसी वैश्विक चुनौतियों से निबटने की खातिर बहुपक्षवाद पर जोर दिया था।

# आईएस ने मोसुल की प्रसिद्ध नूरी मस्जिद को उड़ाया

**बगदाद।** आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट ने मोसुल की प्रसिद्ध झुकी हुई मीनार और उससे जुड़ी मस्जिद को बुधवार को विस्फोट कर उड़ा दिया। यह जानकारी इराकी अधिकारियों ने दी है। हालांकि आईएस ने इसके लिए अमेरिकी हवाई हमले को जिम्मेदार ठहराया है। इसी मस्जिद में आईएस नेता अबू बकर अल बगदादी 2014 में पहली बार लोगों के सामने पेश हुआ था और अपनी खिलाफत की घोषणा की थी।

इराक के प्रधानमंत्री हैदर अल आबदी ने कहा कि मस्जिदों को तबाह किया जाना जिहादियों की ओर से हार की आधिकारिक घोषणा है। इराकी सेना के एक शीर्ष कमांडर अब्दुलमीर याराल्लाह ने एक बयान में कहा, ह्यहमारे जिहादी पुराने शहर में अंदर तक उनके ठिकानों की ओर बढ़ रही है और जब वे नूरी मस्जिद के 50 मीटर के दायरे में घुस गए तो आईएस ने नूरी मस्जिद और हदबा को उड़ा कर एक और ऐतिहासिक अपराध किया। अमेरिका के नेतृत्व वाली सेना से मोसुल में आईएस की चार दिनों से भयंकर लड़ाई चल रही है। चौथे दिन मोसुल के इस दो विख्यात मस्जिदों को तबाह कर दिया गया।

तीन साल पहले जब बगदादी ने खिलाफत की घोषणा की थी, तब से अब तक जिहादी संगठन ने इराक और सीरिया में बड़ी संख्या में धरोहर स्थलों और स्मारकों को तबाह किया है। इराक के सुन्नी बहुल इलाके में कब्जा जमाने के बाद आईएस ने अपनी खिलाफत की घोषणा की थी। उसके बाद मोसुल की नूरी मस्जिद में बगदादी आया था और मुस्लिमों को पहलो धमौपदेश दिया था। सार्वजनिक रूप से बगदादी उसी समय आखिरी बार देखा गया था। उसके बाद से पता नहीं लग पाया है कि वह कहां और किस हाल में है।

आईएस ने नूरी मस्जिद के साथ जिस मीनार को उड़ाया है, उसका नाम अल हब्दा है। यह नूरी मस्जिद के सामने है। मोसुल की यह लोकप्रिय इमारत थी। किसी समय इस मीनार को इराक का टावर ऑफ पिसा कहा जाता था। हब्दा के निर्माण का कार्य 1172 में पूरा हुआ था।

मीनार अपने अद्भुत आकार के लिए शहर की प्रतीक सी बन गई थी और लगभग हर स्थानीय दुकानों के चिह्नों और विज्ञापनों में यह नजर आती थी। कई रेस्ट्रॉन्ट, कंपनियां और स्पोर्ट्स क्लब इसके नाम पर चल रहे हैं। आईएस ने मोसुल पर कब्जा जमाने के बाद कई धरोहर स्थलों को उड़ाया। क्र ने पहले भी हब्दा को तबाह करने की कोशिश की थी लेकिन स्थानीय लोगों के विरोध के कारण ऐसा नहीं हो सका था।

# चीन में वीगर मुसलमानों की लंबी दाढ़ी पर प्रतिबंध

**सं. जगदीश डागर**

चीन सरकार ने शिनजियांग प्रांत में इस्लामी चरमपंथ के खिलाफ अभियान के तहत वीगर मुस्लिमों पर नए प्रतिबंध लगाए गए हैं। इनमें असामान्य रूप से लंबी दाढ़ी रखने, सार्वजनिक स्थानों पर नकाब लगाने और सरकारी टीवी चैनल देखने से मना करने जैसी पाबंदियाँ शामिल हैं। चीन के वीगर मुसलमान शिनजियांग प्रांत में बसे हैं जो चीन सरकार पर अपने साथ भेदभाव करने का आरोप लगाते रहे हैं। हाल के सालों में इस प्रांत में कई खूनी संघर्ष हुए हैं।

चीनी सरकार इस हिंसा के लिए इस्लामिक चरमपंथियों और अलगाववादियों को जिम्मेदार बताती है। मेरे वीज़ा को चीन से जोड़कर न देखें, पासपोर्ट के लिए वीगरों को देना होगा डीएनए नमूना

**सख़्त क़ानून :** ये प्रतिबंध पहले से ही शिनजियांग में लगाए गए थे लेकिन इस हफ़्ते के अंत तक उन्हें क़ानूनी तौर पर लागू किया जा रहा है। इन नियमों के मुताबिक स्टेशन और एयरपोर्ट जैसी सार्वजनिक जगहों पर काम करने वाले कर्मचारी उन लोगों पर रोक लगा सकते हैं जो पूरी तरह से अपने शरीर को ढके रहते हैं या चेहरे पर नक़ाब लगाते हैं। रॉयटर्स न्यूज एजेंसी के मुताबिक नए कानून के तहत ये सब भी प्रतिबंधित होगाः बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिला लेने की अनुमति ना देना, परिवार कल्याण की नीतियों का पालन ना करना, जानबूझकर क़ानूनी दस्तावेज़ों को बर्बाद करना, सिर्फ़ धार्मिक प्रक्रियाओं के तहत शादी करना, वीगर मूल रूप से तुर्की के मुसलमान हैं. शिन्ज़ियांग में इनकी संख्या 45 फीसदी है, वहां 40 फीसदी हान चीनी रहते हैं।

## चीन के शिनजियांग प्रांत में मुसलमानों को कुरान जमा कराने का आदेश

**सं. पं. अशोक कुमार शर्मा मेरठ**

चीन के शिनजियांग प्रांत से आ रही ख़बरों के अनुसार, चीनी अधिकारियों ने स्थानीय मुसलमान आबादी से नमाज़ के दौरान इस्तेमाल होने वाली चटाई और कुरान समेत सभी धार्मिक सामानों को जमा करने का आदेश दिया है। रेडियो फ्री एशिया के मुताबिक, यहां ज्यादातर मुसलमान वीगर, कज़ाख और किर्गिज मूल के हैं। इस बीच, समाचार एजेंसी पीटीआई ने चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता का हवाला देते हुए कहा है कि शिनजियांग प्रांत में शांति है और स्थानीय लोग शांतिपूर्वक रह रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि लोग अफवाहों और निराधार आरोपों से दूर रहेंगे।

उधर, रेडियो फ्री एशिया के मुताबिक अधिकारियों ने स्थानीय लोगों और मस्जिदों से कहा है कि इन आदेशों का तत्काल पालन करें या सज़ा के लिए तैयार रहें। पिछले कुछ सालों से शिनजियांग में मुसलमानों को लंबी दाढ़ी रखने और रमज़ान के दिनों में रोज़ा रखने पर भी पाबंदियां लगाई जाती रही हैं। पिछले बुधवार को कजाकिस्तान की सीमा के पास आल्टे इलाके के एक व्यक्ति ने रेडियो को बताया कि सभी गांवों और काउंटी स्तरों पर कुरान ज़ब्त किए जा रहे हैं।

**चीनी कम्युनिस्ट पार्टी भगवान से ज़्यादा ज़रूरीः** उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लगभग हर घर में एक कुरान है। निर्वासित ग्लोबल वीगर कांग्रेस के प्रवक्ता डिलसैट रैक्सिट के अनुसार, पिछले सप्ताह से काशगर, हुनान और अन्य क्षेत्रों से इसी तरह की कार्रवाई की जानकारी मिली है।

उन्होंने कहा कि उन्हें यह सूचना मिली है कि प्रत्येक वीगर को इस्लाम से संबंधित सभी चीजों को जमा करना होगा। उन्होंने कहा कि पुलिस इसको लागू करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रही है। इस साल की शुरुआत में, शिनजियांग के अधिकारियों ने ये कहते हुए पांच साल के अंदर प्रकाशित सभी कुरान को ज़ब्त कर लिया था कि ये अतिवादी सामग्री हो सकती हैं।

**चीन के शिनजियांग में क्यों हो रही है हिंसा?**

सूचना के मुताबिक, श्री इलीगल एंड वन आइटम अभियान के तहत मुसलमानों की पवित्र किताब समेत सभी धार्मिक वस्तुएं और संभावित चरमपंथी सामानों पर प्रतिबंध लगा दिया है, जैसे कि रिमोट कंट्रोल वाले खिलौने, बड़े चाकू और विस्फोटक सामग्री। इस अभियान के तहत वीगर लोगों के पास मौजूद आपत्तिजनक सामानों को प्रतिबंधित किया जाता है। चीन के पश्चिमी हिस्से में शिंजियांग प्रांत में वीगर समुदाय के करीब एक करोड़ लोग रहते हैं. जातीय रूप से ये तुर्क मुसलमान हैं.

सावरकर टाइम्स द्वारा रिश्ते ही रिश्ते
कार्यालय :- गुलाबदेवी रोड गंदा नाला लोहे का रेलवे पुल, 33 श्याम नगर, जालंधर शहर
संचालक श्रीमति मधु मल्होत्रा
मो. 7837460375

वैकल्पिक ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रमाणित व Govt सब्सिडी के साथ
सोलर कुकर खरीदें
(रु. 3800 - 900 = रु. 2900 केवल)
कुल कीमत सब्सिडी देय कीमत (टैक्स सहित)

• बिना ईंधन (रोटी छोड़कर) सब कुछ बनायें • स्वादिष्ट भोजन (धीमी गति व सम्पूर्ण विटामिन युक्त) • समय बचायें प्रकृति के साथ • प्रदूषण रहित • भोजन गर्म रहता है व जलता नहीं • सुरक्षित, आग का डर नहीं • 2 वर्ष की वारंटी।
आर्य इलैक्ट्रोनिक्स (प्रा. लि.) दिल्ली
सम्पर्क सूत्र : 09313478317, 09313478324